संयम ◆संस्कार ◆संतुलन

R.N.I. No.-UPHIN/2004/22466

शहर समता

वर्ष-23 अंक- 54
पृष्ठ 8
बुधवार
11 नवम्बर 2026
प्रातः संस्करण
हिन्दी दैनिक
प्रयागराज
मूल्य-1.00

प्रयागराज से प्रकाशित Email : shaharsamta@gmail.com Website : https://Shaharsamta.com

सम्पादक-उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

विविध- इस वीकेंड ट्राई करें अचारी दाल...

विचार- सत्ता की परीक्षा, समीकरणों की...

खेल- हैमिल्टन में बारिश के कारण तीसरा...

पीएम ने गोवर्धन पूजा और गुजराती नववर्ष पर दी शुभकामनाएं: बोले-

श्रीकृष्ण भक्तों के भय का नाश करने वाले हैं

नई दिल्ली, एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर सुभाषित पोस्ट करके गोवर्धन पूजा की शुभकामनाएं दीं। इसके साथ ही उन्होंने गुजराती नववर्ष यानी बेस्टू वर्ष के पावन दिन के शुभारंभ पर सभी को शुभकामनाएं दी हैं। उन्होंने कामना की कि नए वर्ष का यह पावन प्रारंभ सभी के जीवन में सुख, शांति, समृद्धि और खुशहाली की नई आशाएं लेकर आए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार सुबह सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट किया, नूतन वर्षाभिनंदन। नए साल की यह शुभ शुरुआत आप सभी के जीवन में खुशी, शांति, समृद्धि और खुशहाली की नई उम्मीदें लेकर आए।



मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ हैं कि आप सभी का जीवन उत्तम स्वास्थ्य, आनंद और उत्साह से भरा रहे। पीएम मोदी ने सोशल मीडिया पोस्ट में लिखा, सभी देशवासियों को गोवर्धन पूजा की बहुत-बहुत शुभकामनाएं। यह पावन पर्व आप सभी के जीवन में नई ऊर्जा और उत्साह का संचार करे। सभी के सुख, सौभाग्य और समृद्धि का विस्तार हो, यही मंगलकामना है। प्रधानमंत्री की ओर से संस्कृत श्लोक, ''आभीरनगरीप्राणप्रियं सत्यपराक्रमम्। स्वभृत्यभयभेत्तारं गोवर्धनधरं भजे।'' साझा किया गया है, जिसका हिंदी अर्थ है कि जो ब्रजवासियों के लिए प्राणप्रिय हैं, सत्य पराक्रमी हैं और अपने भक्तों के भय का नाश करने वाले हैं, ऐसे गोवर्धन गिरिधारी श्रीकृष्ण का मैं भजन करता हूं।

चुनाव आयोग का फैसला

सेवानिवृत्त अधिकारियों पर भी लागू होंगी आचार संहिता की पाबंदियां

नई दिल्ली, एजेंसी। चुनाव आयोग ने विधानसभा चुनाव से पहले आचार संहिता को लेकर बड़ा फैसला लिया है। अब सरकारी कर्मचारियों पर लागू होने वाले चुनावी नियम और पाबंदियां रिटायर्ड सरकारी अधिकारियों और राज्य सरकारों की ओर से नियुक्त किए गए दूसरे लोगों पर भी लागू होंगी। आयोग ने साफ कर दिया है कि सरकारी सेवा से रिटायर होने के बाद भी अगर कोई व्यक्ति सरकार के लिए काम कर रहा है, तो उसे चुनाव के दौरान राजनीतिक रूप से निष्पक्ष रहना होगा। चुनाव आयोग ने स्पष्ट किया है कि राज्य सरकारों और केंद्र शासित प्रदेशों की ओर से नियुक्त किए गए रिटायर्ड अधिकारी या दूसरे लोग किसी भी राजनीतिक दल के चुनाव प्रचार में हिस्सा नहीं ले सकेंगे। वे न तो किसी उम्मीदवार के पक्ष में प्रचार कर पाएंगे और न ही वोट मांगने जैसी गतिविधियों में शामिल हो सकेंगे। आयोग का कहना है कि ऐसे लोगों को अपनी जिम्मेदारियां निभाते समय पूरी निष्पक्षता बरतनी होगी। इस संबंध में चुनाव आयोग ने गोवा, मणिपुर, पंजाब, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड के मुख्य सचिवों और मुख्य निर्वाचन अधिकारियों को पत्र भेजा है। इन पांचों राज्यों में अगले साल की शुरुआत में विधानसभा चुनाव होने हैं। आयोग ने अधिकारियों को निर्देश दिया है कि वे अपने-अपने राज्यों में इन नियमों का पालन सुनिश्चित कराएं। आयोग के इस फैसले का मकसद चुनाव के दौरान सरकारी व्यवस्था की निष्पक्षता बनाए रखना है। अब केवल नौकरी कर रहे सरकारी कर्मचारियों को ही नहीं, बल्कि सरकार से जुड़े कामों में लगाए गए रिटायर्ड अधिकारियों और अन्य लोगों को भी आचार संहिता के दायरे में रहना होगा।



मल्लिकार्जुन खरगे ने दिल्ली में बढ़ते वायु प्रदूषण पर केंद्र को घेरा

पूछा क्या पीएम देंगे हवा का हिसाब



नई दिल्ली, एजेंसी। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने दिल्ली में बढ़ते वायु प्रदूषण के बीच मंगलवार को केंद्र की भाजपा सरकार पर निशाना साधते हुए सवाल किया कि वायु प्रदूषण के मामले में दिल्ली 'विश्वगुरु' क्यों बनती जा रही है और क्या प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी देश को ''हवा का हिसाब'' देने का साहस दिखाएंगे? दिल्ली में दीपावली के बाद प्रदूषण का स्तर लगातार बढ़ रहा है। पड़ोसी राज्यों में पराली जलाए जाने को भी इसकी एक प्रमुख वजह माना जा रहा है। खरगे ने मोदी सरकार पर प्रदूषण से निपटने के लिए टुकड़ों में उपाय करने का आरोप लगाया। उन्होंने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, ''वायु प्रदूषण के मामले में हम 'विश्वगुरु' क्यों बन रहे हैं? टुकड़ों में किए गए उपाय, प्रचार के हथकंडे, अधूरे वादे और एक-दूसरे पर आरोप लगाना भाजपा की पहचान बन गए हैं।'' कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि स्वच्छ हवा मौलिक अधिकार है, सरकार की ओर से दी जाने वाली कोई विशेष सुविधा नहीं। खरगे ने दावा किया कि पिछले साल वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) निगरानी केंद्रों के आसपास पानी के टैंकरों से छिड़काव किया गया था, ताकि प्रदूषण के आंकड़ों को कम दिखाया जा सके। इस साल प्रदूषण चरम पर पहुंचने के दौरान दिल्ली के 59 में से 36 निगरानी केंद्रों पर पीएम2.5 के आंकड़े ही गायब हो गए। उन्होंने आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री मोदी ने पिछले 12 वर्षों में वायु प्रदूषण के मुद्दे पर केवल बयानबाजी की है। उन्होंने दावा किया कि आठ मई, 2019 को मोदी ने इसे बड़ी चुनौती बताया था, लेकिन उनकी सरकार ने इस दिशा में कुछ नहीं किया। खरगे ने कहा कि दिल्ली-एनसीआर से लेकर उत्तर प्रदेश, बिहार, हरियाणा, पंजाब और राजस्थान तक लोग स्वच्छ हवा के लिए तरस रहे हैं। उन्होंने सवाल किया, क्या मोदी जी देश को 'हवा का हिसाब' देने का साहस दिखाएंगे? उन्होंने दावा किया कि सितंबर 2026 के एक आरटीआई जवाब के अनुसार, दिल्ली में पर्यावरण क्षतिपूर्ति के तौर पर जुटाए गए 1,154 करोड़ रुपये खर्च नहीं किए गए।

तमिलनाडु में साइबर ठगों ने बैंक खातों से उड़ाए 22.10 करोड़ रुपये

तमिलनाडु,एजेंसी। तमिलनाडु में बैंक खातों से 22.10 करोड़ रुपये की हेराफेरी से जुड़ा एक ऑनलाइन धोखाधड़ी का मामला सामने आया है। पुलिस ने मंगलवार को यह जानकारी दी। पुलिस के अनुसार, फिलहाल इस धोखाधड़ी से प्राप्त धन के लेन-देन का पता लगाने की कोशिश की जा रही है। साथ ही, यह भी जांच की जा रही है कि क्या इसमें स्थानीय बैंक कर्मचारियों की कोई मिलीभगत है या फिर किसी के बैंक संबंधी विवरण का गलत इस्तेमाल किया गया है। पुलिस को मामले में नाइजीरिया के एक अंतरराष्ट्रीय साइबर अपराध गिरोह के शामिल होने का संदेह है।

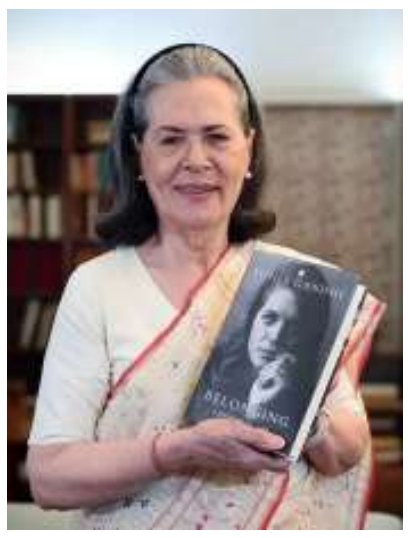
भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेता विनोज पी. सेल्वम ने दावा किया कि इस घटना ने मुख्यमंत्री सी. जोसेफ विजय के नेतृत्व वाली तमिलगा वेत्री कषगम (टीवीके) सरकार की प्रशासनिक निगरानी, घ्ज्जवाबदेही और तैयारियों पर कई गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। सेल्वम ने आज 'एक्स' पर कहा, ''ये राशि ग्रामीण विकास, जरूरी सेवाओं और जन कल्याण के लिए हैं। यह वह पैसा है जो आम नागरिकों के लाभ के लिए सरकार को सौंपा गया था। साइबर अपराधियों ने सरकारी भुगतान प्रणालियों में कथित तौर पर सेंध कैसे लगाई? करोड़ों रुपये के लेन-देन कैसे हो गए? सुरक्षा जांच, वित्तीय नियंत्रण और निगरानी के तंत्र कहां थे?''

उन्होंने सत्तारूढ़ टीवीके पर तंज कसते हुए कहा, ''दुनिया के हर राजनीतिक दल में एक आईटी शाखा होती है, लेकिन तमिलनाडु में कुछ असाधारण देखने को मिला है। पहली बार किसी अभिनेता के प्रशंसक क्लब और उसकी सोशल मीडिया सेना ने 'हैशटैग ट्रेंड' कराने से लेकर सीधे राज्य सरकार चलाने तक का सफर तय कर लिया है! दुर्भाग्य से, हैशटैग संभालना और एक राज्य को चलाना दो बेहद अलग बातें हैं।'' उन्होंने कहा कि तमिलनाडु को पारदर्शी जवाबों, मजबूत संस्थानों और एक ऐसी सरकार की जरूरत है जो सार्वजनिक राशि की सुरक्षा करने की अपनी क्षमता साबित कर सके।

आपातकाल के फैसलों में संजय गांधी का था अहम दखल

सोनिया गांधी ने अपनी आत्मकथा में किए कई खुलासे

नई दिल्ली, एजेंसी। कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी ने अपने दिवंगत देवर संजय गांधी को ''जल्दबाजी में रहने वाला व्यक्ति'' बताते हुए कहा है कि आपातकाल के दौरान फैसले लेने में उनकी ''अहम भूमिका'' थी, जबकि कुछ राजनीतिक हस्तक्षेपों के लिए उनके पास कोई संवैधानिक अधिकार नहीं था। सोनिया गांधी ने अपनी आत्मकथा 'बिलॉन्गिंगः ए जर्नी ऑफ लव' में कहा है कि आपातकाल के समय के घटनाक्रम को उन्होंने करीब से देखा था। उन्होंने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी मन ही मन आपातकाल को लेकर कभी पूरी तरह सहज नहीं थीं, लेकिन उस समय की ''अराजक स्थिति'' के कारण उन्हें यह कदम उठाने के लिए मजबूर होना पड़ा था। सोनिया ने पुस्तक में इसका स्मरण किया कि 26 जून, 1975 की सुबह भारत की नींद आपातकाल के साये में खुली थी। उससे पिछली रात गिरफ्तारियां हुई थीं और सुबह तक विपक्ष के अधिकतर प्रमुख नेताओं तथा असहमति जताने वालों को जेल में डाल दिया गया था। सरकार के शीर्ष नेताओं को सरकारी अतिथि गृहों में रखा गया था, जबकि अन्य लोगों को अलग-अलग जेलों में बंद किया गया था। उन्होंने लिखा है कि बंदी प्रत्यक्षीकरण का अधिकार निलंबित कर दिया



गया था और विरोध-प्रदर्शनों तथा सभाओं पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। आत्मकथा में सोनिया ने लिखा, ''देश ने खुद को एक तरह की पाबंदी में पाया। प्रेस पर सेंसरशिप लगा दी गई थी। कुछ अखबारों ने तुरंत इसका पालन किया, जबकि कुछ ने थोड़े समय तक इसका विरोध किया।'' उन्होंने कहा कि आपातकाल और उस दौर की उथल-पुथल भरी घटनाओं में संजय की भूमिका को लेकर सच और झूठ, दोनों तरह की बहुत-सी बातें लिखी गई हैं। इनमें यह भी कहा गया कि उन्हें 'मारुति' खोने की चिंता थी या वह अपने राजनीतिक भविष्य को लेकर आशंकित थे। सोनिया ने लिखा, ''उनकी जो भी कमियां रही हों, लेकिन संजय कायर नहीं थे। दरअसल, वह इस हद तक निडर थे कि लापरवाह हो जाते थे। बाद की घटनाओं से भी यह साबित हुआ कि उनमें किसी भी परिस्थिति का सामना करने और संघर्ष करके दोबारा राजनीतिक नेतृत्व हासिल करने का पर्याप्त साहस था।'' उन्होंने कहा, ''हालांकि, इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि आपातकाल के दौरान फैसले लेने में उनकी अहम भूमिका थी, जबकि उनके कुछ राजनीतिक हस्तक्षेपों के लिए उनके पास संवैधानिक अधिकार नहीं था।'' सोनिया ने बताया कि संजय ने पांच सूत्री कार्यक्रम शुरू किया था, जिसका मकसद दहेज, जातिगत भेदभाव और निरक्षरता जैसी सामाजिक बुराइयों से निपटना तथा परिवार नियोजन, वृक्षारोपण और शहरी सुधार को बढ़ावा देना था। ये कार्यक्रम युवा कांग्रेस के जरिए चलाए जा रहे थे और संजय का समर्थन हासिल करने के इच्छुक उसके कई सदस्य आक्रामक तथा कठोर रवैया अपनाते थे। उन्होंने लिखा कि संजय के एजेंडे में परिवार नियोजन का कार्यक्रम सबसे अधिक दूरगामी परिणामों वाला साबित हुआ।

यह कार्यक्रम ठीक से तैयार नहीं किया गया था और इसे बेरहमी से लागू किया गया। सरकारी अधिकारियों को नसबंदी के लक्ष्य पूरे करने के लिए प्रोत्साहन दिए जाते थे। सोनिया ने दिल्ली सहित विभिन्न शहरों में संजय द्वारा झुग्गियों और शहरी अतिक्रमणों को हटाए जाने तथा इस अभियान को लागू करने के तरीके का भी जिक्र किया। उन्होंने लिखा कि इससे लोगों में गहरी नाराजगी और आक्रोश पैदा हुआ। सोनिया के मुताबिक, राजीव को लगता था कि उनकी मां ''राजनीतिक मुद्दों पर संजय के आक्रामक रुख'' के कारण दबाव में थीं।

कंगना रनौत का बड़ा बयानः सोनिया गांधी को बताया रहस्यमयी विदेशी नागरिक, गांधी परिवार के इतिहास पर साधा निशाना

नई दिल्ली, एजेंसी। अभिनेत्री और भारतीय जनता पार्टी की सांसद कंगना रनौत अपने बयानों को लेकर चर्चा में रहती हैं। उन्होंने कांग्रेस की सीनियर नेता सोनिया गांधी पर तीखा हमला बोला है। उन्होंने सोनिया गांधी के राजनीतिक रूप से प्रमुख बनने पर सवाल उठाए और गांधी परिवार से जुड़ी घटनाओं के



सिलसिले को कई संयोगों की एक श्रृंखला करार दिया है। अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर कंगना ने सोनिया गांधी को लेकर लिखा, शहर कोई एनवीडिया हनी ट्रैप विवाद के बारे में बात कर रहा है। आपातकाल (इमरजेंसी) के दौर को लेकर मैंने भारतीय राजनीति और गांधी परिवार पर काफी रिसर्च की है। मुझे यह बात कभी समझ नहीं आई कि कैसे एक रहस्यमयी विदेशी नागरिक गांधी परिवार में आती है, फिर इंदिरा गांधी, संजय गांधी और राजीव गांधी, जो सत्ता के संभावित उत्तराधिकारी थे- सब मारे जाते हैं। अंत में सत्ता के लिए केवल एक ही विकल्प बचता है, वह विदेशी नागरिक सोनिया गांधी। कंगना ने आगे लिखा लोगों को यह भी अजीब नहीं लगा कि इतने सारे संयोग एक साथ कैसे हो गए।

PRESS
हमेशा आपके साथ

दैनिक एवं साप्ताहिक हिंदी समाचार पत्र

शहर समता
संयम ★ संस्कार ★ संतुलन

Website
www.shaharsamta.com

Subscribe on YouTube
youtube.com/@shaharsamtanews

सही खबर, सही समय पर

स्थापित 2001 • RNI Dainik UPHIN/2004/22466 • साप्ताहिक UPHIN/2001/03996 • कार्यालय 289/238 A कर्नलगंज प्रयागराज • संपर्क 9005239332, 9450482227

तीन नई खुली जेलों के निर्माण के लिए 4.59 करोड़ मंजूर, हाईकोर्ट ने मांगा समयबद्ध खाका

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश में खुली जेलों के विस्तार की दिशा में सरकार ने कदम बढ़ाया है। इलाहाबाद हाईकोर्ट में दाखिल अनुपालन हलफनामे के मुताबिक प्रदेश में तीन नई खुली सुधार संस्थाओं (ओपन करेक्शनल इंस्टीट्यूशन) की स्थापना के लिए 4.59 करोड़ रुपये की धनराशि मंजूर कर दी गई है।

उत्तर प्रदेश में खुली जेलों के विस्तार की दिशा में सरकार ने कदम बढ़ाया है। इलाहाबाद हाईकोर्ट में दाखिल अनुपालन हलफनामे के मुताबिक प्रदेश में तीन नई खुली सुधार संस्थाओं (ओपन करेक्शनल इंस्टीट्यूशन) की स्थापना के लिए 4.59 करोड़ रुपये की धनराशि मंजूर कर दी गई है। हालांकि, बजट स्वीकृत होने के बावजूद इन संस्थाओं के निर्माण और पात्र बंदियों के चयन की समयसीमा अभी तय नहीं हो सकी है। इस पर हाईकोर्ट ने राज्य सरकार से स्पष्ट कार्ययोजना मांगी है। यह आदेश न्यायमूर्ति सौमित्र दयाल सिंह और न्यायमूर्ति स्वरूपमा चतुर्वेदी की खंडपीठ ने खुली सुधार संस्थाओं की स्थापना, संचालन और विस्तार से जुड़ी जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए दिया है। सरकार की ओर से दाखिल अनुपालन हलफनामे में बताया गया कि दो नवंबर 2026 को जारी शासनादेश के माध्यम से तीन नई संस्थाओं के लिए बजट मंजूर किया गया है। इनमें केंद्रीय कारागार फतेहगढ़ में 100 बंदियों, नारी बंदी निकेतन लखनऊ में 50 महिला बंदियों और जिला कारागार गौतमबुद्धनगर में 80 बंदियों की क्षमता वाली संस्थाएं स्थापित की जाएंगी। यानी कुल 230 बंदियों को इन सुविधाओं का लाभ मिल सकेगा। अपर महाधिवक्ता ने आश्वासन दिया कि इन संस्थाओं की स्थापना में अब देरी नहीं होगी। हालांकि, कोर्ट ने केवल आश्वासन को पर्याप्त नहीं माना। कोर्ट ने कहा कि सरकार को निश्चित समयसीमा बतानी होगी कि निर्माण कब शुरू होगा और कब पूरा होगा। इसके साथ ही यह भी स्पष्ट करना होगा कि खुली जेलों के लिए पात्र दोषियों की पहचान और चयन किस तरह किया जाएगा। कोर्ट ने जेल प्रशासन एवं सुधार विभाग के विशेष सचिव को नया हलफनामा दाखिल करने का आदेश दिया है। इसमें निर्माण एजेंसी के चयन, आवश्यक निर्माण कार्यों, निर्माण की समयसीमा और पात्र बंदियों की पहचान के लिए उठाए गए या उठाए जाने वाले कदमों का ब्योरा देना होगा। मामले की अगली सुनवाई 20 नवंबर को दोपहर दो बजे होगी।

पूर्व सैनिकों के लिए प्रयागराज में 27 को लगेगा रोजगार मेला

प्रयागराज। सेना से सेवानिवृत्त होने के बाद रोजगार की तलाश कर रहे पूर्व सैनिकों कोसपुनरू नौकरी देने की कवायद शुरू हुई है। रक्षा मंत्रालय के पूर्व सैनिक कल्याण विभाग के अंतर्गत डायरेक्टोरेट जनरल रीसेटलमेंट (डीजीआर) की ओर से 27 नवंबर को प्रयागराज में रोजगार मेला आयोजित किया जाएगा। न्यू कैंटोनमेंट स्थित कोबरा ऑडिटोरियम में सुबह सात बजे से लगने वाले इस मेले में थलसेना, नौसेना और वायुसेना के पूर्व सैनिकों को निजी क्षेत्र में रोजगार पाने का अवसर मिलेगा। मेले में सुरक्षा, आईटी, प्रशासन, लॉजिस्टिक्स, स्वास्थ्य सेवा और इंजीनियरिंग समेत विभिन्न क्षेत्रों की कंपनियां भर्ती के लिए पहुंचेंगी। कंपनियां पूर्व सैनिकों के अनुशासन, नेतृत्व क्षमता, तकनीकी दक्षता और कार्य अनुभव के आधार पर उपयुक्त उम्मीदवारों का चयन कर सकेंगी। मेले में साक्षात्कार और चयन प्रक्रिया भी आयोजित की जाएगी। डीजीआर वित्तीय वर्ष 2026–27 में देशभर में पूर्व सैनिकों के लिए 18 रोजगार मेले आयोजित कर रहा है। इसके तहत प्रयागराज में होने वाला मेला पूर्व सैनिकों को नागरिक कार्यबल से जोड़ने की महत्वपूर्ण पहल है।

घर जाने के लिए ट्रेनों में उमड़ी भीड़, यात्रियों से पैक रहीं बसें, घंटों करना पड़ा इंतजार

प्रयागराज। दिवाली पर अपनों के बीच घर पहुंचकर खुशियां बांटने की चाहत शनिवार को प्रयागराज के रेलवे स्टेशनों और बस अड्डों पर साफ नजर आई। दिवाली से एक दिन पहले शहर के प्रमुख परिवहन केंद्रों पर यात्रियों का सैलाब रहा। दिवाली पर अपनों के बीच घर पहुंचकर खुशियां बांटने की चाहत शनिवार को



प्रयागराज के रेलवे स्टेशनों और बस अड्डों पर साफ नजर आई। दिवाली से एक दिन पहले शहर के प्रमुख परिवहन केंद्रों पर यात्रियों का सैलाब रहा। पूर्वांचल और बिहार जाने वाले मुख्य मार्गों पर वाहनों में पैर रखने तक की जगह नहीं बची। इससे हर तरफ त्योहारी सीजन की गहमागहमी का माहौल रहा। प्रयागराज जंक्शन पर सुबह से ही दिल्ली और मुंबई से आने वाली ट्रेनों से उतरने वाले यात्रियों का तांता लगा रहा। इनमें से काफी ऐसे लोग रहे जो जंक्शन पर उतरने के बाद बुंदेलखंड, पूर्वांचल और बिहार की ओर जाने वाली अन्य गाड़ियों का इंतजार करते दिखे। पर्व मनाने की जल्दी और यात्रियों के भारी दबाव को देखते हुए रेलवे प्रशासन भी मुस्तैद नजर आया। यात्रियों की अतिरिक्त भीड़ को नियंत्रित करने के लिए प्रयागराज जंक्शन से मुंबई के लोकमान्य तिलक टर्मिनस के लिए एक विशेष ट्रेन रवाना की गई, जिससे घर जाने वालों को काफी हद तक राहत मिली। उधर, प्रयाग स्टेशन पर भी गाजीपुर, अयोध्या और जौनपुर जाने वाली ट्रेनों में भीड़ रही। वहीं, सिविल लाइंस और अन्य डिपो से पूर्वांचल की तरफ जाने वाली रोडवेज बसों में जबरदस्त मारामारी रही। जौनपुर, देवरिया, आजमगढ़ और गोरखपुर रूट की बसें ठसाठस भरी दिखीं। कई यात्रियों को सीट पाने के लिए मशक्कत करनी पड़ी, तो कई लोग खड़े होकर ही गंतव्य की ओर रवाना हुए।

करेलाबाग के घरों में दूषित जलापूर्ति

प्रयागराज। करेलाबाग वार्ड के अबूबकर मस्जिद के पीछे रहने वाले नागरिक एक वर्ष से अधिक समय से दूषित पेयजल की समस्या झेल रहे हैं। घरों के नलों से कभी पीला, कभी मटमैला तो कभी काले रंग का पानी आ रहा है। पानी से दुर्गंध भी आती है। खराब स्वाद के कारण लोग इसका इस्तेमाल पीने और खाना बनाने में नहीं कर पा रहे हैं। दूषित पानी से डायरिया, हैजा, टाइफाइड, पेचिश और हेपेटाइटिस–ए जैसी बीमारियों का खतरा बना हुआ है। नागरिकों ने जीएम जल निगम और मुख्य विकास अधिकारी को लिखित प्रार्थनापत्र देकर शिकायत की है। प्रभावित लोगों ने पेयजल के नमूनों की प्रयोगशाला में जांच, पाइपलाइन में लीकेज और सीवर की मिलावट की तकनीकी पड़ताल कर तत्काल समाधान करने की मांग की है।

'वो पर्ची निकालकर लोगों को मूर्ख बनाते हैं'

अब प्रतापगढ़ से सपा सांसद एसपी का धीरेंद्र शास्त्री पर हमला

प्रयागराज। सपा सांसद ने कहा कि धीरेंद्र शास्त्री विवादित बयान देते है। वे पर्ची निकालकर लोगों को मूर्ख बनाने काम करते है। सांसद का आरोप है कि उन्होंने धर्म को पैसा कमाने का धंधा बना रखा है। यूपी के प्रतापगढ़ में बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री की प्रस्तावित हनुमंत कथा को लेकर सियासी और धार्मिक घमासान तेज हो गया है। जनसत दल (लोकतांत्रिक) के राष्ट्रीय अध्यक्ष और कुंडा विधायक रघुराज प्रताप सिंह उर्फ राजा भैया द्वारा बेंती में आयोजित होने वाली तीन दिवसीय कार्यक्रम समाजवादी पार्टी ने खुलकर विरोध करना शुरू कर दिया है। सपा प्रमुख अखिलेश यादव के बाद प्रतापगढ़ सांसद डॉ. एसपी सिंह पटेल ने धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री पर सीधा हमला बोलते हुए उनकी कथा रोकने की मांग की है। सपा सांसद ने कहा कि धीरेंद्र शास्त्री विवादित बयान देते है। वे पर्ची निकालकर लोगों को मूर्ख बनाने काम करते है।



सांसद का आरोप है कि उन्होंने धर्म को पैसा कमाने का धंधा बना रखा है। कहा कि ऐसे विवादित और समाज में भ्रम फैलाने वाले लोगों से धार्मिक कथा का आयोजन कतई नहीं कराया जाना चाहिए।

अखिलेश बोले– रद्द करें कार्यक्रम, अब सच्चे सनातनी लिखेंगे पर्ची

इससे पहले, समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट कर भगवान कृष्ण और भगवान राम के पिता को लेकर कथित आपत्तिजनक सामग्री प्रसारित किए जाने पर नाराजगी जताई है। उन्होंने सवाल उठाया कि आखिर किसके कहने पर ऐसी गतिविधियां की जा रही हैं।

अखिलेश यादव ने पोस्ट में लिखा, "ये सनातन विरोधी किसके कहने पर सक्रिय है। पहले भगवान कृष्ण के बारे में विवादित वीडियो आया, अब भगवान राम के पिता के बारे में अभद्रता की बात प्रसारित हो रही है। इसके राजनीतिक आकाओं को ये सब मंजूर होगा, हमें अंश मात्र भी स्वीकार्य नहीं है।" उन्होंने सामाजिक सौहार्द बिगाड़ने के आरोप में संबंधित व्यक्ति के सभी कार्यक्रम रद्द करने की मांग की। साथ ही पोस्ट के अंत में लिखा, "अब सच्चे सनातनी इनकी पर्ची लिखेंगे।"

बता दें कि कुंडा के बेंती स्थित परेड ग्राउंड पर 17 से 19 नवंबर तक भव्य हनुमंत कथा का आयोजन होगा।

हाईकोर्ट की तल्ख टिप्पणी: प्रदेश में मानवाधिकार की हालत खस्ता, पुलिस की बेपरवाही शर्मनाक

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि प्रदेश में नागरिक स्वतंत्रता की हालत खस्ता है, जो बेहद शर्मनाक है। थानों के सीसीटीवी फुटेज पेश करने में आनाकानी नागरिकों के मौलिक अधिकारों और उनकी स्वतंत्रता के प्रति पुलिस की बेपरवाही की कहानी बयां करती है। इस तल्ख टिप्पणी के साथ न्यायमूर्ति अतुल श्रीधरन और न्यायमूर्ति अचल सचदेव की खंडपीठ ने अफजल अहमद की बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका पर बिजनौर पुलिस पर 20 हजार रुपये का हर्जाना लगाया है। साथ ही अवैध हिरासत में लिए गए याची को तत्काल रिहा करने का आदेश दिया है।



याची की बेटी ने आरोप लगाया कि पांच सितंबर को सादे कपड़ों में पहुंचे पुलिसकर्मी और एसओजी के सदस्यों ने थाने के गेट के पास से उनके पिता को घेरकर उनकी गाड़ी से उठा लिया था। वहीं, उनकी गिरफ्तारी सात सितंबर को दर्शायी गई। मामले की सच्चाई जानने के लिए कोर्ट ने पांच सितंबर दोपहर एक से सात सितंबर सुबह 10 बजे तक का सीसीटीवी फुटेज तलब किया था।

पुलिस ने फुटेज उपलब्ध कराने में असमर्थता जताई। दलील दी कि आंधी–तूफान के दौरान पानी केबल के जरिये सीसीटीवी सिस्टम में पहुंच गया था, जिससे रिकॉर्डिंग व्यवस्था खराब हो गई। कोर्ट ने कहा कि जब भी सीसीटीवी फुटेज मांगा जाता है तो किसी न किसी कारण से उसके उपलब्ध न होने की रिपोर्ट सामने आ जाती है।

कोर्ट ने स्पष्ट किया कि अवैध हिरासत के मामलों में सीसीटीवी खराब होने का बहाना स्वीकार नहीं किया जा सकता। ऐसी स्थिति में फुटेज जानबूझकर छिपाने की आशंका को भी गंभीरता से देखा जा सकता है। कोर्ट ने संबंधित थाना प्रभारी अन्नू कुमारी की भूमिका पर भी सवाल उठाते हुए उनके सर्विस रिकॉर्ड में प्रतिकूल प्रविष्टि दर्ज करने का आदेश दिया है।

सेवापुस्तिका में गड़बड़ी करने के आरोप में बेसिक शिक्षा निदेशक समेत 2 पर एफआईआर

पूर्व कर्मचारी ने दी शिकायत

प्रयागराज। सेवापुस्तिका में गड़बड़ी करने के आरोप में बेसिक शिक्षा निदेशक समेत दो पर मुकदमा दर्ज किया गया है। परीक्षा नियामक प्राधिकारी के तत्कालीन सचिव समेत दो लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है। दोनों पर परीक्षा नियामक प्राधिकारी में तैनाती के दौरान एक कर्मचारी की सेवापुस्तिका में गलत प्रविष्टि दर्ज कराने का आरोप है। मामले में कोर्ट के आदेश पर परीक्षा नियामक प्राधिकारी (पीएनपी) तत्कालीन सचिव अनिल भूषण चतुर्वेदी के साथ वरिष्ठ सहायक इष्टदेव उपाध्याय को भी नामजद किया गया है। एफआईआर के मुताबिक, सिविल लाइंस निवासी शशि कुमार यादव ने बताया कि वह वर्ष 1995 से परीक्षा नियामक प्राधिकारी कार्यालय में काम कर रहे थे।

पूर्व कर्मचारी की शिकायत पर वरिष्ठ सहायक भी नामजद



रहते हुए सेवापुस्तिका में गलत प्रविष्टि कराने का आरोप है। पूर्व कर्मचारी की शिकायत पर वरिष्ठ सहायक भी नामजद किए गए हैं। कर्नलगंज पुलिस ने जांच शुरू कर दी है।

उत्तर प्रदेश के बेसिक शिक्षा निदेशक अनिल भूषण चतुर्वेदी एक से 31 मार्च 2021 तक वह बीमारी के कारण छुट्टी पर थे। इस छुट्टी को 27 जुलाई 2021 को वेतन सहित मंजूरी मिली थी। आरोप है कि 24 जून 2021 को तत्कालीन सचिव के निर्देश पर वरिष्ठ सहायक ने उनकी मूल सेवापुस्तिका और निजी पत्रावली मंगवाई थी।

बाद में जब सेवापुस्तिका मिली तो उसमें 31 मार्च 2021 की तारीख से प्रतिकूल प्रविष्टि दर्ज थी। शशि कुमार का कहना है कि 22 जून 2021 को सेवापुस्तिका की प्रमाणित कॉपी में यह प्रविष्टि नहीं थी।

कर्नलगंज पुलिस ने शुरू की जांच

सूचना का अधिकार के तहत मिली जानकारी और कार्यालय के रजिस्टर के आधार पर उन्होंने आरोप लगाया कि प्रविष्टि बाद में दर्ज कर पुरानी तारीख डाल दी गई। कर्नलगंज थाना प्रभारी ज्ञानेश्वर मिश्रा ने बताया कि एफआईआर दर्ज की गई है, सभी पहलुओं पर जांच की जांच की गई।

वहीं, इस संबंध में उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा विभाग के डायरेक्टर अनिल भूषण चतुर्वेदी का कहना है कि अभी इस फिर के बारे में उन्हें जानकारी नहीं है। जानकारी होने पर ही इस पर कुछ बता सकूंगा।

ललितपुर में प्रेमिका की मां, बहन और भाई पर प्रेमी ने किया हमला

इससे पहले ललितपुर में में एक व्यक्ति ने प्रेमिका के घर जाकर उसकी मां, छोटी बहन, भाई पर चाकू से ताबड़तोड़ हमला कर दिया, जिसमें तीन लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना की सूचना मिलते ही मौके पर पहुंची डायल 112 पुलिस ने तत्काल तीनों घायलों को गंभीर हालत में इलाज के लिए मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया। लिव इन रिलेशनशिप में रहने से मना करने पर प्रेमी ने इस घटना को अंजाम दिया।

मुहल्ला आजादपुरा निवासी वीर सिंह अपनी छोटी 20 वर्षीय बेटी, 14 वर्षीय और करीब 40 वर्षीय पत्नी के साथ बुधबार को अपने घर पर मौजूद था जबकि उसकी करीब 23 वर्षीय बड़ी बेटी अपने प्रेमी मुहल्ला चौबयाना निवासी मयंक उर्फ़ मोंटी नमदेव के साथ उसके घर पर थी। मिताली करीब डेढ़ वर्ष पूर्व अपने प्रेमी के साथ उसके घर लिव इन रिलेशनशिप में रह रही थी और पिछले करीब चार माह से उन दोनों के बीच अनबन भी चल रही थी। जिसकी खबर उसके पिता को भी थी। बी बुधवार को उसकी बड़ी बेटी पिता के घर आ गई और प्रेमी की ज्यादती से परिजनों को अवगत कराया। इसके बाद पिता अपनी बेटी को लेकर किसी काम से चला गया। इसी दौरान प्रेमी मयंक उसके घर आ धमका और प्रेमिका के परिजनों से मारपीट करने लगा। मिताली की मां ने जब इसका विरोध किया तो युवक ने उन पर चाकुओं से ताबड़तोड़ हमला कर दिया।

लिव इन पार्टनर ने पत्थर मारकर की प्रेमिका की हत्या, पत्नी के छोड़ने के बाद साथ रह रहे थे दोनों

प्रयागराज। यूपी के प्रयागराज से एक सनसनीखेज मामला सामने आया है। जहां नगर पंचायत शंकरगढ़ के रावण टोला में सोमवार शाम लिव इन में रहे युवक–युवती के बीच हुए विवाद ने हिंसक रूप ले लिया। युवती ने युवक के सिर पर पत्थर मार दिया। आनन–फानन में परिजन उसे सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र शंकरगढ़ ले गए, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।



रावण टोला के रहने वाले शेखर की पत्नी उसे छोड़कर जा चुकी थी। इसके बाद वह उर्मिला केवट को बिना शादी किए साथ रखता था। सोमवार शाम को दोनों के बीच किसी बात को लेकर कहासुनी शुरू हुई, जो मारपीट में बदल गई। इसी दौरान उर्मिला ने शेखर के सिर पर पत्थर से वार कर दिया। सिर में गंभीर चोट लगने से उसकी मौत हो गई। शंकरगढ़ पुलिस मौके पर पहुंची और शव को पोस्टमार्टम के लिए प्रयागराज भेज दिया। देर शाम फॉरेंसिक टीम ने घटनास्थल का निरीक्षण किया और साक्ष्य जुटाए। इस संबंध में थाना प्रभारी शंकरगढ़ प्रीतम तिवारी ने बताया कि लिव इन में रह रहे युवक–युवती के बीच विवाद के दौरान यह घटना हुई है। युवती की गिरफ्तारी के लिए पुलिस टीमें दबिश दे रही हैं। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

गोशालाओं में अलग–अलग रखे जाएंगे बीमार और नर–मादा पशु

प्रयागराज। जिले की सभी 105 गोशालाओं में पशुओं को अलग–अलग रखने की व्यवस्था की जाएगी। इसी के तहत अब गोशालाओं में गाय, सांड़ और बीमार पशुओं के रहने की अलग–अलग व्यवस्था होगी। जिला पशु चिकित्सा अधिकारी शिवनाथ यादव ने बताया कि इस समय जिले की सभी गोशालाओं में कुल 24 हजार मवेशी रखे गए हैं। अब एडीओ की सहायता से सभी गोशालाओं में बीमार और नर, मादा मवेशी को अलग–अलग रखने व्यवस्था तैयार कराई जाएगी। बताया कि फिलहाल अभी बजट नहीं मिला है। बजट जारी होने के बाद निर्माण और जरूरी व्यवस्थाओं की प्रक्रिया शुरू होगा। गोशालाओं में सभी पशुओं को एक साथ रखने से कई तरह की समस्याएं सामने आती हैं। बीमार पशुओं के संपर्क में आने से दूसरे पशुओं में भी संक्रमण का खतरा रहता है। वहीं, नर और मादा पशुओं को साथ रखने पर कई बार उनके बीच लड़ाई भी हो जाती है। इससे पशुओं के घायल होने की आशंका बनी रहती है। इन समस्याओं को देखते हुए अलग–अलग आश्रय स्थल बनाने की योजना तैयार की गई है।

नए अवतार में लौटा अवतार टॉकीज

प्रयागराज। कोरोना महामारी के दौरान बंद हुआ तेलियरगंज स्थित अवतार टॉकीज अब नए कलेवर के साथ फिर चालू हो गया। लगभग साढ़े छह साल बाद इसका पूरी तरह नवीनीकरण कर आधुनिक मल्टीप्लेक्स के रूप में दर्शकों के लिए खोल दिया गया है। पुराने सिनेमाघर के ढांचे को मॉडिफाई कर दो अलग–अलग ऑडी में विकसित किया गया है। दिवाली के अवसर पर पहली ऑडी में फिल्म रामायण दिखाई जा रही है। नए स्वरूप में तैयार पहली ऑडी में 198 दर्शकों के बैठने की व्यवस्था की गई है। पूरे परिसर को वातानुकूलित बनाया गया है। दर्शकों के आराम के लिए आधुनिक सीटें लगाई गई हैं। वहीं, बेहतर सिनेमाई अनुभव के लिए डॉल्बी साउंड सिस्टम और अत्याधुनिक तकनीक का इस्तेमाल किया गया है। सिनेमा हॉल प्रबंधन के मोहन सिंह ने बताया कि सिनेमाघर को दो स्क्रीन में विकसित करने की योजना है। पहले चरण में ऑडी–1 शुरू कर दी गई है, जबकि दूसरी ऑडी का काम तेजी से कराया जा रहा है। इसे भी अगले एक से दो महीने के भीतर दर्शकों के लिए खोलने की तैयारी है।

हाईकोर्ट: पढ़ाई को ढाल बना चुनाव ड्यूटी से इन्कार नहीं कर सकते सरकारी शिक्षक, पांच टीचरों की याचिका खारिज

प्रयागराज। बच्चों की पढ़ाई का हवाला देकर शिक्षक चुनावी जिम्मेदारी से नहीं बच सकेंगे। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने सरकारी शिक्षकों को बीएलओ के रूप में तैनात करने को वैध ठहराते हुए कहा कि मतदाता सूची तैयार करना और उसका पुनरीक्षण वैधानिक दायित्व है। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने सरकारी शिक्षकों की चुनाव संबंधी ड्यूटी को वैध ठहराया है। कोर्ट ने कहा कि शिक्षकों का मूल दायित्व बच्चों को पढ़ाना है, लेकिन संविधान और जनप्रतिनिधित्व अधिनियम के तहत उन्हें निर्वाचन संबंधी कार्यों में भी लगाया जा सकता है। इसलिए वे शिक्षण कार्य का हवाला देकर चुनाव ड्यूटी से इन्कार नहीं कर सकते। यह टिप्पणी न्यायमूर्ति विनोद दिवाकर की एकल पीठ ने सहारनपुर के जूनियर और सीनियर बेसिक स्कूलों में कार्यरत अजरा परवीन समेत पांच सहायक अध्यापकों की याचिका खारिज करते हुए की। याचियों ने उन्हें मतदाता सूची से जुड़े कार्यों से मुक्त करने की मांग की थी। उनका तर्क था कि शिक्षकों की सेवा शर्तों में बूथ लेवल अधिकारी (बीएलओ) का कार्य करने का कोई प्रावधान नहीं है।

संक्षिप्त

गोवर्धन पूजा पर इस्कॉन मंदिर में उमड़ी भीड़, भगवान को 56 भोग लगा

लखनऊ, संवाददाता। राजधानी के सुशांत गोल्फ सिटी स्थित राधारमण बिहारी (इस्कॉन) मंदिर में मंगलवार को गोवर्धन पूजा और अन्नकूट महोत्सव धूमधाम से मनाया गया। सुबह से ही भगवान के दर्शन के लिए श्रद्धालुओं की लंबी कतार लगी रही। भक्तों ने दूध, शहद, घी, 1008 तीर्थों के जल, विभिन्न फलों के रस और फूलों से गिरिराज शिला का अभिषेक किया। इसके बाद भगवान श्रीकृष्ण और गिरिराज महाराज को 56 प्रकार के व्यंजनों का भोग लगाया गया। गोवर्धन कथा, भजन–कीर्तन और नृत्य के बीच भक्तों ने चार परिक्रमा लगाकर गिरिराज महाराज की आराधना की। आयोजन का समापन अन्नकूट भंडारे में भोजन प्रसाद वितरण के साथ हुआ। महोत्सव का शुभारंभ मंदिर अध्यक्ष अपरिमेय श्याम प्रभु ने गोवर्धन शिला के अभिषेक और पूजन–अर्चन के साथ किया। इसके बाद गोवर्धन महात्म्य और भगवान श्रीकृष्ण की गोवर्धन लीला का वर्णन किया गया। मंदिर परिसर में दिनभर भक्ति और उत्साह का माहौल रहा। गोवर्धन कथा सुनाते हुए अपरिमेय श्याम प्रभु ने बताया कि भगवान श्रीकृष्ण ने सात वर्ष की उम्र में सात कोस के गोवर्धन पर्वत को सात दिनों तक अपनी अंगुली पर उठाया था। इस लीला के माध्यम से भगवान ने प्रकृति, गाय और गोवर्धन पर्वत के प्रति सम्मान का संदेश दिया। श्याम प्रभु ने बताया कि नंद बाबा और यशोदा मैया ने भी गाय, ब्राह्मणों और गिरिराज गोवर्धन की पूजा करने की प्रेरणा दी थी। उन्होंने श्रद्धालुओं से हरे कृष्ण महामंत्र का अधिक से अधिक जाप करने और श्रीमद्भगवद्गीता का नियमित स्वाध्याय करने की अपील की।

इनोवा की टक्कर से साइकिल सवार इलेक्ट्रिशियन की मौत

लखनऊ, संवाददाता। राजधानी लखनऊ के बिजनौर थाना क्षेत्र में इनोवा क्रिस्टा की टक्कर से घायल साइकिल सवार इलेक्ट्रिशियन रामनरायन (60) की 9 नवंबर को ट्रामा सेंटर में इलाज के दौरान मौत हो गई। उनके बेटे आकाश ने कार चालक के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई है। आकाश के मुताबिक, उनके पिता आजमगढ़ जिले के गंभीरपुर थाना क्षेत्र के अमिलिया के रहने वाले थे। वह बिजनौर थाना क्षेत्र की ओमेक्स सिटी में किराए का कमरा लेकर इलेक्ट्रिशियन का काम करते थे। आकाश ने बताया कि 8 नवंबर 2026 की रात करीब 8 बजे रामनरायन बिजनौर बाजार से सामान खरीदकर साइकिल से अपने कमरे की ओर जा रहे थे। औरंगाबाद पुलिस चौकी तिराहे के पास सामने से आ रही इनोवा क्रिस्टा (यूपी32 एलए 3838) ने उनकी साइकिल को टक्कर मार दी। टक्कर से रामनरायन गंभीर रूप से घायल हो गए। स्थानीय लोग उन्हें लोकबंधु अस्पताल ले गए। वहां से डॉक्टरों ने उन्हें ट्रामा सेंटर भेजा, जहां इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। आकाश की शिकायत पर बिजनौर पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर आगे की कार्रवाई शुरू की है। पुलिस ने शव पोस्टमार्टम के लिए भेजा।

ट्रैक्टर से टकराई बाइक, घायल युवक की मौत

लखनऊ, संवाददाता। राजधानी के माल–अतरौली मार्ग पर अटारी पेट्रोल पंप के सामने ट्रैक्टर से टकराकर घायल हुए बाइक सवार विपिन (22) की सोमवार रात इलाज के दौरान मौत हो गई। उसका दुबग्गा के निजी अस्पताल देवम में इलाज चल रहा था। हादसे में उसका चचेरा भाई लवकुश (19) भी घायल हुआ था। रहीमाबाद थाना क्षेत्र के रंडा खेड़ा गांव का रहने वाला विपिन, पिता श्रीपाल के साथ खेती–किसानी में हाथ बंटाता था। 17 अक्टूबर को वह लवकुश के साथ माल क्षेत्र के बीरपुर गांव में अपने बहनोई श्यामू के घर छत की स्लैब डलवाने गया था। शाम करीब चार बजे दोनों बाइक से घर लौट रहे थे। अटारी पेट्रोल पंप के सामने एक ट्रैक्टर टंकी से डीजल भरवाकर सड़क पर निकल रहा था। ट्रैक्टर को अचानक सामने देखकर बाइक चला रहे विपिन ने ब्रेक लगाए। बाइक अनियंत्रित होकर ट्रैक्टर से टकरा गई। दोनों गंभीर रूप से घायल हो गए। सूचना पर पहुंची पुलिस दोनों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र माल ले गई। प्राथमिक इलाज के बाद विपिन की हालत नाजुक होने पर उसे ट्रामा सेंटर रेफर किया गया। परिजन उसे दुबग्गा के निजी अस्पताल देवम ले गए, जहां सोमवार रात उसकी मौत हो गई। विपिन के परिवार में पिता श्रीपाल, मां बिटाना, भाई सचिन और बहन सुमन हैं। माल इंस्पेक्टर नवाब अहमद ने बताया कि हादसे के बाद विपिन की मां की तहरीर पर मुकदमा दर्ज किया गया था। पुलिस ने हादसे में शामिल ट्रैक्टर को कब्जे में ले लिया था।

तमंचे और कारतूस के साथ युवक गिरफ्तार

लखनऊ, संवाददाता। राजधानी की बिजनौर पुलिस ने सोमवार रात शहीद पथ सर्विस लेन पर छुहाराखेड़ा जाने वाली पुलिया के पास एक युवक को गिरफ्तार किया। उसके पास से 12 बोर का तमंचा, दो जिंदा कारतूस और 213 रुपए मिले। पुलिस के मुताबिक, 9 नवंबर 2026 को उपनिरीक्षक अभिराम शुक्ला पुलिसकर्मियों के साथ इलाके में गश्त कर रहे थे। इसी दौरान मुखबिर ने सूचना दी कि पुलिया के पास एक संदिग्ध व्यक्ति खड़ा है, जिसके पास अवैध हथियार हो सकता है। पुलिस टीम ने मौके पर पहुंचकर घेराबंदी की और रात करीब 9.35 बजे युवक को पकड़ लिया। तलाशी में उसकी पैंट की दाहिनी फेंट से तमंचा और बाईं जेब से दो जिंदा कारतूस मिले। जामा तलाशी में 213 रुपए भी मिले। पुलिस ने बताया कि युवक ने अपना नाम रोहित कुमार, पिता ओमप्रकाश, निवासी शिवनाम गांव, थाना लोनी कटरा, जिला बाराबंकी बताया। पुलिस ने उसके खिलाफ आर्म्स एक्ट के तहत केस दर्ज कर उसे जेल भेज दिया।

घर से निकले युवक का सड़क किनारे मिला शव

लखनऊ, संवाददाता। राजधानी के माल थाना क्षेत्र में मंगलवार सुबह एक युवक का शव संदिग्ध परिस्थितियों में सड़क किनारे पड़ा मिला। शव बरगदिया चौराहे पर स्थित पशु बाजार के सामने लकड़ी के तख्त पर था। राहगीरों की सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव की पहचान हरदोई निवासी शंकर उर्फ छोटू (22) के रूप में की। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। युवक सोमवार शाम घर से बिना बताए निकला था। पुलिस के मुताबिक, शंकर हरदोई जिले के अतरौली थाना क्षेत्र के गोडवा खेम गांव का रहने वाला था। वह सोमवार शाम करीब 4 बजे घर से बिना बताए निकला था। मंगलवार सुबह करीब 10 बजे उसका शव माल थाना क्षेत्र के बरगदिया चौराहे पर पशु बाजार के सामने मिला। परिजनों के मुताबिक, शंकर इधर–उधर मजदूरी करता था। वह घर भी कम ही आता था। परिवार में उसके पिता मंगू, मां कविता, एक भाई अरविंद और दो विवाहित बहनें हैं।

वैदिक ज्ञान परम्परा में स्त्री विमर्श विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी

प्रयागराज। प्रो. राजेन्द्र सिंह रज्जू भय्या विश्वविद्यालय प्रयागराज के संस्कृत विभाग एवं प्रो. अनिता स्वामी शोध संस्थान, नई दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 10 नवम्बर 2026 को वैदिक ज्ञान परम्परा में स्त्री विमर्श विषय पर एक दिवसीय ऑनलाइन राष्ट्रीय संगोष्ठी का सफल आयोजन किया गया। कुलपति डॉ. अखिलेश कुमार सिंह की प्रेरणा एवं संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो. आशुतोष कुमार सिंह के निर्देशानुसार संगोष्ठी का उद्देश्य भारतीय वैदिक ज्ञान परम्परा में नारी की स्थिति, भूमिका, अधिकार, गरिमा, वैचारिक स्वतंत्रता तथा सामाजिक–सांस्कृतिक योगदान का शास्त्रीय एवं समकालीन परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण करना था। कार्यक्रम का शुभारम्भ लौकिक मंगलाचरण एवं अतिथियों के ऑनलाइन जुड़ने के साथ हुआ। उद्घाटन सत्र में प्रो. राम नाथ झा ने अध्यक्षता की। डॉ. प्रवीण कुमार द्विवेदी ने स्वागत उद्बोधन प्रस्तुत करते हुए संगोष्ठी की विषयवस्तु एवं प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर श्री विनोद स्वामी ने उद्घाटन उद्बोधन प्रदान किया । डॉ. उदयशंकर पाण्डेय ने विषय प्रवर्तन किया। डॉ. सूर्यकान्त त्रिपाठी ने सारस्वत उद्बोधन में भारतीय परम्परा में नारी की ज्ञानात्मक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक भूमिका पर प्रकाश डाला। अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. राम नाथ झा ने वैदिक वाङ्मय में नारी की प्रतिष्ठा तथा भारतीय समाज के निर्माण में उसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका का उल्लेख किया। उद्घाटन सत्र का संचालन शोधच्छात्रा सुश्री शिखा श्रीवास्तव ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन शोधच्छात्र श्री नितिन



त्रिपाठी ने गया। संगोष्ठी के प्रथम शैक्षणिक सत्र की अध्यक्षता उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज के आचार्य प्रो. विनोद कुमार गुप्ता ने की।

इस सत्र में विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं शैक्षणिक संस्थानों से जुड़े विद्वानों ने अपने शोधपत्रों के माध्यम से वैदिक ज्ञान परम्परा में स्त्री–विमर्श के विविध आयामों पर विचार प्रस्तुत किए। डॉ. प्रियंका सिंह, डॉ. घनश्याम मिश्र , डॉ. विकास शर्मा , डॉ. कपिल गौतम तथा डॉ. मणिशंकर द्विवेदी ने इस विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किये। द्वितीय शैक्षणिक सत्र की अध्यक्षता इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रयागराज के भूगोल विभाग की सहायक आचार्या डॉ. महाविश अंजुम ने की। इस सत्र में श्रीमती नीलम तिवारी, डॉ. इन्दु सोनी ने डॉ. मोहिनी श्रीवास्तव , सुश्री अन्नू यादव , सुश्री अर्चना सारण , श्री नितिन त्रिपाठी, सुश्री शिखा श्रीवास्तव तथा श्री अनुराग आजाद ने शोधपत्र प्रस्तुत किये। डॉ. देवनारायण पाठक ने भी अपने शोधपत्र के माध्यम से विषय के विभिन्न पक्षों पर विचार रखे।

संगोष्ठी में प्रस्तुत शोधपत्रों के माध्यम से यह तथ्य उभरकर सामने आया कि वैदिक साहित्य में नारी केवल पारिवारिक जीवन तक सीमित नहीं थी, अपितु वह ज्ञान, दर्शन, अध्यात्म, यज्ञ, शिक्षा एवं सामाजिक व्यवस्था की सक्रिय सहभागी भी थी। गार्गी, मैत्रेयी, घोषा, अपाला एवं लोपामुद्रा जैसी विदुषी ऋषिकाओं का उल्लेख भारतीय ज्ञान परम्परा में स्त्री की बौद्धिक एवं आध्यात्मिक प्रतिष्ठा का प्रमाण है। वक्ताओं ने इस बात पर बल दिया कि वैदिक वाङ्मय में नारी के योगदान का सम्यक् अध्ययन वर्तमान स्त्री विमर्श को भारतीय दृष्टिकोण प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। संगोष्ठी के समापन सत्र में प्रो. अनिता स्वामी के पितृश्री ने अपने विचार व्यक्त किये। प्रो. राम नाथ झा ने अध्यक्षीय उद्बोधन में संगोष्ठी की शैक्षणिक उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए इस प्रकार के विमर्शों को भारतीय ज्ञान परम्परा के पुनर्पाठ एवं संवर्धन के लिए आवश्यक बताया। समापन सत्र का संचालन श्री नितिन त्रिपाठी ने किया तथा डॉ. प्रवीण कुमार द्विवेदी ने आभार ज्ञापन प्रस्तुत किया।

इस राष्ट्रीय संगोष्ठी के संयोजक डॉ. प्रवीण कुमार द्विवेदी रहे। कार्यक्रम में देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं शैक्षणिक संस्थानों के प्राध्यापकों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों ने ऑनलाइन माध्यम से सहभागिता की। संगोष्ठी ने वैदिक ज्ञान परम्परा में स्त्री की गरिमामयी स्थिति, उसके ज्ञानात्मक योगदान तथा समकालीन स्त्री विमर्श की भारतीय आधारभूमि को समझने की दिशा में एक सार्थक अकादमिक पहल प्रस्तुत की।

अब एक्सप्रेसवे पर चलने से पहले होगी चालकों की जांच, बिना फिटनेस नहीं मिलेगी एंट्री

लखनऊ, संवाददाता। लखनऊ–आगरा एक्सप्रेसवे पर हुए भीषण बस हादसे के बाद उत्तर प्रदेश सरकार ने सड़क सुरक्षा को लेकर सख्त रुख अपनाया है। प्रदेश के सभी एक्सप्रेसवे पर अब वाहन चालकों की जांच अनिवार्य करने की तैयारी है। एक्सप्रेसवे पर वाहन लेकर जाने से पहले चालक का स्वास्थ्य परीक्षण किया जाएगा। साथ ही यह भी जांच होगी कि चालक ने किसी मादक पदार्थ का सेवन तो नहीं किया है।



उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने इस संबंध में संबंधित विभागों के अधिकारियों को पत्र भेजकर जरूरी कार्रवाई के निर्देश दिए हैं। उन्होंने गृह विभाग के अपर मुख्य सचिव, परिवहन आयुक्त, यूपीसीडा के सीईओ और रोडवेज के प्रबंध निदेशक को पत्र भेजा है। निर्देशों के मुताबिक, एक्सप्रेसवे पर प्रवेश से पहले वाहन चालकों की फिटनेस जांच सुनिश्चित की जाएगी। चालक के स्वास्थ्य और नशे की स्थिति की जांच के बाद ही उसे आगे जाने की अनुमति देने की व्यवस्था लागू करने पर जोर दिया गया है।

गति सीमा का उलंघन करने वालों पर होगी कार्रवाई

सरकार ने एक्सप्रेसवे पर निर्धारित गति सीमा का सख्ती से पालन कराने के भी निर्देश दिए हैं। तेज रफ्तार और यातायात नियमों की अनदेखी करने वाले वाहन चालकों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। संबंधित अधिकारियों को नियमों का प्रभावी ढंग से पालन सुनिश्चित कराने को कहा गया है।

जीरो पॉइंट पर हुए हादसे के बाद बढ़ी सख्ती

गौरतलब है कि कल आगरा एक्सप्रेसवे के जीरो पॉइंट पर भीषण बस हादसा हुआ था। इस घटना के बाद सड़क सुरक्षा और वाहन चालकों की जिम्मेदारी को लेकर सवाल उठे। अब सरकार ने प्रदेश के सभी एक्सप्रेसवे पर चालकों की फिटनेस, नशे की जांच और निर्धारित गति सीमा के पालन को लेकर सख्ती बरतने के निर्देश दिए हैं।

भाई की हत्या करने वाला आरोपी गिरफ्तार

लखनऊ, संवाददाता। नगराम थाना क्षेत्र के समेसी गांव में जमीन बेचने को लेकर हुए विवाद में रामऔतार ने अपने भाई जियालाल की ईंट से सिर पर वार कर हत्या कर दी। इसके बाद उसने शव गांव के पास कुएं में फेंक दिया। पुलिस ने 24 घंटे के अंदर रामऔतार को गिरफ्तार किया। पुलिस पूछताछ में आरोपी रामऔतार पुत्र स्वर्गीय शिवदयाल रावत, उम्र करीब 45 वर्ष, निवासी ग्राम समेसी ने बताया कि वह नशा करने का आदी है। नशे की लत के चलते उसने अपनी जमीन बेचकर अपने भाई जियालाल के साथ गांव के खेत में बनी मड़ई में रहना शुरू कर दिया था। दिनांक 08 नवंबर 2026 को उसने अपने भाई से जमीन बेचने की बात कही, लेकिन भाई जियालाल ने जमीन बेचने से मना कर दिया। इसी बात को लेकर दोनों के बीच विवाद हो गया। गुस्से में आकर रामऔतार ने पास में पड़ी ईंट से अपने भाई के सिर पर कई बार वार कर दिया था। पुलिस ने आरोपी की निशानदेही पर हत्या में इस्तेमाल ईंट भी जब्त की। पुलिस कमिश्नरेट लखनऊ के प्रेस नोट के मुताबिक, 10 नवंबर 2026 को सुंदरलाल पुत्र स्वर्गीय शिवदयाल रावत, निवासी समेसी की शिकायत पर नगराम थाने में केस दर्ज किया गया। केस नंबर 159ध्2026 में बीएनएस की धारा 103(1)ध्238(क) लगाई गई। शिकायत में आरोप लगाया गया कि जमीन बेचने की बात पर विवाद के बाद रामऔतार ने जियालाल के सिर पर ईंट से कई बार वार किए और शव कुएं में फेंक दिया। पुलिस पूछताछ में रामऔतार, उम्र करीब 45 साल, ने बताया कि वह नशा करता है। उसने अपनी जमीन बेच दी थी और भाई जियालाल के साथ गांव के खेत में बनी मड़ई में रहने लगा था। रामऔतार के मुताबिक, 8 नवंबर 2026 को उसने जियालाल से जमीन बेचने की बात कही थी। जियालाल ने मना किया तो दोनों के बीच विवाद हुआ। इसके बाद रामऔतार ने पास पड़ी ईंट से उसके सिर पर कई बार वार किए। जियालाल की मौत के बाद उसने शव कुएं में फेंक दिया। जिससे उसकी मौत हो गई। इसके बाद आरोपी ने शव को पास के कुएं में फेंक दिया। घटना की गंभीरता को देखते हुए पुलिस उपायुक्त दक्षिणी के निर्देशन में दो पुलिस टीमों का गठन किया गया। अपर पुलिस उपायुक्त दक्षिणी के पर्यवेक्षण तथा सहायक पुलिस आयुक्त मोहनलालगंज के मार्गदर्शन में थाना प्रभारी नगराम अंजनी कुमार सिंह के नेतृत्व में गठित पुलिस टीम ने तकनीकी एवं मैनुअल सूचनाओं के आधार पर लगातार कार्रवाई की। पुलिस टीम ने आरोपी रामऔतार को गिरफ्तार कर लिया। साथ ही उसकी निशानदेही पर हत्या में प्रयुक्त आलाकत्ल ईंट भी बरामद की गई। नगराम पुलिस ने गिरफ्तार आरोपी के विरुद्ध आवश्यक विधिक कार्रवाई पूरी करते हुए उसे न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया। इस पूरी कार्रवाई में थाना प्रभारी नगराम अंजनी कुमार सिंह के नेतृत्व में नगराम पुलिस टीम की अहम भूमिका रही। पुलिस की तत्परता और सक्रियता के चलते हत्या जैसी गंभीर वारदात में आरोपी को 24 घंटे के भीतर गिरफ्तार कर लिया गया।

एक्सप्रेसवे पर भीषण हादसा, अनियंत्रित होकर पलटी बस, 3 यात्रियों की मौत

लखनऊ, संवाददाता। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के बाहरी इलाके में लखनऊ–आगरा एक्सप्रेसवे पर सोमवार सुबह एक बस के सड़क किनारे पलट जाने से तीन यात्रियों की मौत हो गई, जबकि 44 अन्य घायल हो गए। पुलिस ने यह जानकारी दी। उपमुख्यमंत्री एवं स्वास्थ्य मंत्री ब्रजेश पाठक ने बताया कि हादसा सुबह करीब छह से साढ़े छह बजे के बीच पारा थाना क्षेत्र में एक्सप्रेसवे के पहले टोल प्लाजा के पास हुआ। पाठक ने पत्रकारों को बताया कि घायलों में से तीन को अस्पताल पहुंचने पर मृत घोषित कर दिया गया। इनमें दो यात्रियों को लोकबंधु अस्पताल में, जबकि एक को किंग जॉर्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय (केजीएमयू) ले जाया गया था। उन्होंने बताया कि हादसे में घायल 31 यात्रियों को लोकबंधु अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जबकि 13 अन्य का इलाज केजीएमयू के ट्रॉमा सेंटर में चल रहा है।

पर्व की पावन बेला

(छप्पय)

त्योहारों का रंग हमेशा इक–सा रहता।
अंतस भरा उमंग सभी से हँसकर कहता।
खपरैलों के बीच गीत बनकर जब आयी।
पावन नव्य प्रसंग बनी महलों में छायी।
करती कभी न भेद जो निर्धन और अमीर में।
समरसता–रस घोलती पर्वों की तस्वीर में।।

आदिग्रन्थ के साथ कथाओं के मंथन से।
उदित हुए त्योहार परम के शुभ चिन्तन से।
मिटा अविद्या ध्वांत पर्व की पावन बेला।
बनी सुहावन भोर लगाती सुन्दर मेला।
हँसती–गाती झोपड़ी खुशी मनाते हैं महल।
अद्भुत है यह ईश की कहे जगत प्यारी पहल।।

डॉ. प्रदीप चित्रांशी
लूकरगंज, प्रयागराज

बहोरीकपुर में श्रद्धा और उल्लास के साथ हुई भगवान श्री चित्रगुप्त की पूजा

बहोरीकपुर (प्रयागराज)। ग्राम बहोरीकपुर में कायस्थ परिवार की ओर से सामूहिक रूप से भगवान श्री चित्रगुप्त की पूजा–अर्चना एवं कलम–दवात पूजन का आयोजन श्रद्धा और उल्लास के साथ किया गया। इस अवसर पर कायस्थ समाज के लोगों ने भगवान श्री चित्रगुप्त के चित्र पर माल्यार्पण कर विधि–विधान से पूजा–अर्चना की तथा कलम–दवात की पूजा कर सुख–समृद्धि एवं ज्ञान की कामना की। कार्यक्रम के दौरान कवि अनिल कुमार श्रीवास्तव बहोरीकपुरी ने अपनी स्वरचित कविता का पाठ कर उपस्थित लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। उनके काव्य पाठ की लोगों ने सराहना की। इस अवसर पर कवि अनिल कुमार श्रीवास्तव, शुभम श्रीवास्तव, केशव सक्सेना, शिव प्रताप श्रीवास्तव, शशांक श्रीवास्तव, दिव्यांश सहित अनेक ग्रामवासी उपस्थित रहे।

हिस्ट्रीशीटर की गुम्मे से सिर कूंचकर हत्या,खून से लतपथ शव मिला

लखनऊ, संवाददाता। राजधानी के मानकनगर थाना क्षेत्र में हिस्ट्रीशीटर रमाशंकर उर्फ छोटू कालिया (55) की गुम्मे से कूंचकर हत्या कर दी गई। उनका खून से लथपथ शव मंगलवार सुबह घर की छत पर मिला। रात में छत पर दोस्तों के साथ शराब पार्टी चल रही थी। इस दौरान काफी देर तक शोर–शराबा और गुम्मा चलने की आवाजें आती रहीं। परिजनों ने समझा कि शराब के नशे में लोग हंगामा कर रहे हैं। सुबह पिता का शव देखकर परिवार में चीख–पुकार मच गई। मृतक के परिवार में दो बेटे आशु और विवेक और एक विवाहित बेटी खुशी है। बड़ा बेटा आशियाना में रहता है। रामनगर मंगलखेड़ा, आलमबाग निवासी बेटे आशु ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि 9 नवंबर की रात करीब 10 से 11 बजे के बीच पिता रमाशंकर उर्फ छोटू कालिया अपने दोस्त वीरेश बहादुर सिंह उर्फ किंकी और चार–पांच अन्य लोगों के साथ घर की छत पर पार्टी कर रहे थे।

इस दौरान छत से काफी शोर–शराबे और गुम्मा चलने की आवाजें आ रही थीं। मंगलवार सुबह करीब 10 बजे परिवार के लोग छत पर पहुंचे तो पिता खून से लथपथ मृत पड़े थे। इसके बाद पुलिस कंट्रोल रूम को सूचना दी गई। मौके पर पहुंची मानकनगर पुलिस और फोरेंसिक टीम ने घटनास्थल से साक्ष्य जुटाए। शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया गया है। बेटे आशु ने इस मामले में नामजद वीरेश बहादुर सिंह व 4–5 अज्ञात लोगों के खिलाफ शिकायत दी है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। हत्या के पीछे की वजह और वारदात में शामिल लोगों की भूमिका का पता लगाया जा रहा है।

बीजेपी के पूर्व सांसद का दिल्ली में निधन, पिछले कुछ दिनों से थे बीमार, मुख्यमंत्री ने जताया शोक

लखनऊ, संवाददाता। उत्तर प्रदेश के देवरिया से सांसद रहे और सेना में लेफ्टिनेंट जनरल के पद पर सेवाएं दे चुके श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी का रविवार को 91 वर्ष की उम्र में नई दिल्ली में निधन हो गया। वह कुछ दिनों से बीमार थे। त्रिपाठी के बेटे और देवरिया से मौजूदा भाजपा सांसद शशांक मणि त्रिपाठी ने सोशल मीडिया के जरिए यह जानकारी दी। शशांक मणि ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, मेरे पिताजी, देवरिया के पूर्व सांसद एवं देश के वरिष्ठ सैन्य अधिकारी रहे लेफ्टिनेंट जनरल श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी का प्रातः 11 बजकर 15 मिनट पर दिल्ली में निधन हो गया। शशांक ने एक अन्य पोस्ट में कहा, अपने प्रियजनों, शुभचिंतकों एवं क्षेत्रवासियों के अंतिम दर्शन के पश्चात उनके पार्थिव शरीर की अंतिम यात्रा एवं अंतिम संस्कार निर्धारित कार्यक्रमानुसार संपन्न होगा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने त्रिपाठी के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में त्रिपाठी को श्रद्धांजलि दी। उन्होंने कहा, देवरिया के पूर्व सांसद एवं लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी का निधन अत्यंत दुःखद है। उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि। आदित्यनाथ ने कहा, प्रभु श्री राम से प्रार्थना है कि दिवंगत पुण्यात्मा को सद्गति तथा शोकाकुल परिजनों को यह अथाह दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करें। ओम शांति। वर्ष 1996 और 1999 में देवरिया से भाजपा के सांसद रहे श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी के परिवार में पत्नी और एक पुत्र हैं। त्रिपाठी का सैन्य और राजनीतिक दोनों क्षेत्रों में लंबा अनुभव रहा। सेना में वरिष्ठ अधिकारी के रूप में सेवाएं देने के बाद उन्होंने राजनीति में प्रवेश किया और देवरिया से दो बार लोकसभा के लिए निर्वाचित हुए।

उत्तर मध्य रेलवे

निविदा सूचना संख्या: 26-विद्युत/सा0/प्रयागराज/2627 दिनांक: 06.11.2026

ई-निविदा सूचना (विद्युत सामान्य विभाग)

भारत के राष्ट्रपति की ओर से वरिष्ठ मंडल विद्युत अभियंता (सामान्य) उत्तर मध्य रेलवे प्रयागराज निर्धारित प्रपत्र पर निम्नलिखित कार्यों हेतु ई-निविदा दिनांक- 02.12.2026 समय 15:00 बजे तक आमंत्रित करते हैं। निविदा सम्बंधित विस्तृत विवरण निम्नलिखित हैं:-

निविदा सूचना संख्या: ELG-63-2627	कार्य की लागत (रु. में): ₹ 1,45,36,455.58

कार्य का नाम: सीएनडब्लू (न्यू कानपुर) स्थित रनिंग रूम के सुदृढ़ीकरण के संबंध में वातानुकूलन (एसी) की व्यवस्था एवं विद्युत आपूर्ति क्षमता में वृद्धि का कार्य।

बिड सिक्योरिटी (रु. में): ₹ 2,90,700.00	कार्य समाप्त करने की समयावधि: 12 माह
निविदा सूचना संख्या: ELG-64-2627	कार्य की लागत (रु. में): ₹ 2,80,88,017.85

कार्य का नाम: रेलवे लोको रनिंग स्टाफ हेतु एमडीएचटीआई/सीएनबी में 400 बिस्तरों की क्षमता वाले छात्रावास भवन के निर्माण के संबंध में वातानुकूलन (एसी) की व्यवस्था एवं विद्युत आपूर्ति क्षमता में वृद्धि का कार्य।

बिड सिक्योरिटी (रु. में): ₹ 5,61,800.00	कार्य समाप्त करने की समयावधि: 12 माह

निविदा खुलने की तिथि: 02.12.2026, समय- 15:00 बजे।

नोट:- (1) उपरोक्त ई-टेंडर के साथ पूरी जानकारी (निविदा दस्तावेज के साथ) वेबसाइट www.ireps.gov.in पर 15:00 बजे निविदा खोलने की तिथि तक उपलब्ध है। 2559/26(A)

North central railways | @CPRONCR | www.ncr.indianrailways.gov.in

सम्पादकीय.....

वोट चोरी के बहाने अराजक आंदोलन

देश के वर्तमान राजनीतिक वातावरण को लेकर जनमानस में अनेक प्रकार के सवाल उठ रहे हैं। इन सवालों के जवाब स्वाभाविक रूप से उन राजनीतिक दलों की ओर से अवश्य ही आना चाहिए, जो राजनीतिक धुरी के रूप में अपने आपको स्थापित करने का प्रयास करते हैं। वर्तमान में वोट चोरी को मुख्य मुद्दा बनाकर विपक्ष केंद्र सरकार पर हमला करने का कोई मौका नहीं चूक रहा है, वहीं सत्ता पक्ष की ओर से भी जमकर प्रत्युत्तर देने का साहसिक प्रयास किया जा रहा है। ऐसे में जनता की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है। क्योंकि लोकतंत्र में जनता ही सर्वोपरि होती है। लोकतंत्र के मायने भी यही हैं कि देश में जनता की सरकार है, राजनीतिक दलों की नहीं। जनता अपने प्रतिनिधि के रूप में इन्हें चुनकर भेजती है। भारतीय लोकतंत्र में चुनाव केवल सत्ता परिवर्तन का माध्यम नहीं, बल्कि जनता के विश्वास और जनादेश की अभिव्यक्ति हैं। वर्तमान में विपक्ष खासकर कांग्रेस की ओर से चुनाव प्रक्रिया पर सवाल उठा रही है। यह विपक्ष का लोकतांत्रिक अधिकार है, लेकिन सवाल उठाने और संवैधानिक संस्थाओं को कठघरे में खड़ा कर राजनीतिक अराजकता पैदा करने के बीच एक स्पष्ट अंतर है। दुर्भाग्य से कांग्रेस आज इसी अंतर को समझने में असफल दिखाई दे रही है। वोट चोरी के आरोपों को आधार बनाकर आंदोलन खड़ा करने की उसकी कोशिश राजनीतिक रणनीति से अधिक अपनी हताशा और दिशाहीनता का प्रदर्शन प्रतीत होती है। लोकतंत्र में विरोध का अधिकार जितना महत्वपूर्ण है, उतनी ही महत्वपूर्ण उसकी मर्यादा भी है। यदि किसी राजनीतिक दल को लगता है कि चुनाव प्रक्रिया में अनियमितता हुई है, तो उसके पास संवैधानिक और कानूनी मंच उपलब्ध हैं। उसे तथ्यों, प्रमाणों और ठोस तर्कों के साथ अपनी बात रखनी चाहिए। लेकिन किसी संवैधानिक पद पर बैठे मुख्य चुनाव आयुक्त को हटाने की मांग को आंदोलन का केंद्रीय विषय बना देना क्या उचित राजनीतिक तरीका है? मुख्य चुनाव आयुक्त को हटाने की एक निर्धारित संवैधानिक प्रक्रिया है। उसे राजनीतिक दबाव और सड़कों पर शक्ति प्रदर्शन के माध्यम से प्रभावित करने की कोशिश लोकतांत्रिक संस्थाओं की गरिमा के अनुकूल नहीं कही जा सकती। कांग्रेस को यह समझना होगा कि चुनाव में लगातार मिल रही पराजय का पूरा दोष चुनाव आयोग या मुख्य चुनाव आयुक्त पर डालकर वह अपनी राजनीतिक जिम्मेदारियों से बच नहीं सकती। कांग्रेस की चुनावी चुनौतियां आज की नहीं हैं। पार्टी लंबे समय से अनेक राज्यों और राष्ट्रीय स्तर पर जनसमर्थन खोती रही है। इसके पीछे संगठनात्मक कमजोरी, नेतृत्व का संकट, स्थानीय स्तर पर प्रभावी नेतृत्व का अभाव और जनता से टूटता संवाद जैसे अनेक कारण हैं। इन कारणों का आत्मविश्लेषण करने के बजाय हर पराजय के बाद चुनाव प्रक्रिया पर प्रश्नचिह्न लगाना समस्या का समाधान नहीं है। कांग्रेस ने अपने आंदोलन के लिए समय का चयन भी ठीक नहीं किया। देश में दीपावली का उत्सव निकट है। बाजारों में रौनक है, व्यापारी अपने प्रतिष्ठानों को सजाने, कारोबार बढ़ाने और ग्राहकों की तैयारी में व्यस्त हैं। आम परिवार खरीदारी, त्योहार की तैयारियों और पारिवारिक जिम्मेदारियों में जुटे हैं। ऐसे समय में व्यापक जनभागीदारी की अपेक्षा करना व्यावहारिक राजनीतिक समझ का परिचय नहीं देता। स्वाभाविक है कि आंदोलन में अपेक्षित संख्या नहीं जुट पाई। राजनीति केवल नारे लगाने से नहीं चलती, इसके लिए समाज की मनःस्थिति, समय और परिस्थितियों को समझना भी आवश्यक है। विशेष रूप से व्यापारी वर्ग की भावनाओं को नजरअंदाज करना कांग्रेस की रणनीतिक भूल कही जा सकती है। त्योहारों का समय व्यापारियों के लिए वर्ष के सबसे महत्वपूर्ण कारोबारी अवसरों में से एक होता है। व्यापारी वर्ग यदि आंदोलन के समय और स्वरूप को लेकर अपनी असहमति व्यक्त कर रहा था, तो कांग्रेस नेतृत्व को उसके अनुरोध पर गंभीरता से विचार करना चाहिए था। लोकतांत्रिक राजनीति का अर्थ समाज के विभिन्न वर्गों की परेशानियों और प्राथमिकताओं को समझना है, न कि अपनी राजनीतिक सुविधा के अनुसार उनसे सहभागिता की अपेक्षा करना। कांग्रेस को यह भी समझना होगा कि सत्ता का रास्ता आंदोलन की भीड़ से नहीं, जनता के विश्वास से होकर गुजरता है। यदि पार्टी वास्तव में सत्ता में वापसी चाहती है तो उसे जनता के बीच जाना होगा। किसानों के लिए उसकी क्या नीति है? युवाओं को रोजगार देने की उसकी योजना क्या है? महंगाई, शिक्षा, स्वास्थ्य, राष्ट्रीय सुरक्षा और आर्थिक विकास को लेकर उसका दृष्टिकोण क्या है? देश की बदलती आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप उसका भविष्य का विजन क्या है? इन प्रश्नों के स्पष्ट उत्तर जनता के सामने रखने होंगे।

सत्ता की परीक्षा, समीकरणों की अग्निपरीक्षा

ललित गर्ग

प्रश्न है कि योगी की मजबूत पकड़ के सामने विपक्ष की चुनौती, मुस्लिम मतों से आगे हिंदू मतदाताओं की बदलती मनोदशा निर्णायक बन पायेगी?

उत्तर प्रदेश की राजनीति में 2027 का विधानसभा चुनाव अभी कई महीने दूर है, लेकिन सत्ता की बिसात बिछ चुकी है। 403 विधानसभा सीटों वाला उत्तर प्रदेश केवल एक राज्य का चुनाव नहीं, बल्कि राष्ट्रीय राजनीति की दिशा तय करने वाला निर्णायक राजनीतिक रणक्षेत्र है। इसीलिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सक्रियता, भाजपा संगठन में बदलाव, अखिलेश यादव की राजनीतिक रणनीति, विपक्षी दलों के संभावित गठजोड़ और मुस्लिम मतदाताओं को लेकर बन रहे नए समीकरण—सभी पर देश की निगाहें टिकी हैं। प्रश्न है कि योगी की मजबूत पकड़ के सामने विपक्ष की चुनौती, मुस्लिम मतों से आगे हिंदू मतदाताओं की बदलती मनोदशा निर्णायक बन पायेगी? प्रश्न यह भी है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का चेहरा एवं योजनाएं भी क्या प्रदेश का राजनीतिक नेतृत्व एवं भाग्य रचने में सहायक होगी? सबसे पहले भाजपा की स्थिति को देखें तो उसके सामने सबसे बड़ी ताकत योगी आदित्यनाथ का नेतृत्व और सरकार की उपलब्धियों का दावा है। कानून—व्यवस्था, बुनियादी ढांचे, एक्सप्रेस—वे, धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थलों के विकास तथा केंद्र—राज्य की योजनाओं को भाजपा चुनावी मुद्दा बनाने की तैयारी में है। योगी का दावा है कि 2027 का मुकाबला '80 बनाम 20' के रूप में होगा और भाजपा गठबंधन 300 से अधिक सीटें जीतेगा। लेकिन चुनावी राजनीति में दावे और वास्तविक जनभावना के बीच अंतर होता है। इसलिए भाजपा के लिए चुनौती केवल अपनी उपलब्धियां गिनाना नहीं, बल्कि यह सुनिश्चित करना भी है कि सत्ता—विरोधी भावना उसके पारंपरिक सामाजिक आधार में सेंध न लगाए। भाजपा की रणनीति में इस बार मुस्लिम समाज के भीतर पहुंच बनाने का प्रयास भी स्पष्ट दिखाई देता है। अगस्त 2026 में पार्टी की राष्ट्रीय टीम में उत्तर प्रदेश के दो मुस्लिम नेताओं—पूर्व अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. तारिक मंसूर को राष्ट्रीय उपाध्यक्ष और कुंवर बासित अली को राष्ट्रीय अल्पसंख्यक मोर्चा अध्यक्ष की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी दी गई। राजनीतिक विश्लेषकों ने इसे 2027 से पहले भाजपा की पसमांदा तथा मुस्लिम समाज के कुछ वर्गों तक पहुंच बढ़ाने की रणनीति से जोड़ा है। यह कदम इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि 2011 की जनगणना के अनुसार उत्तर प्रदेश में मुस्लिम आबादी 19.26 प्रतिशत थी। पश्चिमी उत्तर प्रदेश और कुछ अन्य क्षेत्रों में उनका चुनावी प्रभाव कई सीटों पर निर्णायक हो सकता है। लेकिन भाजपा के लिए चुनौती यह है कि मुस्लिम मतों में सेंध लगाना जितना कठिन है, उससे कहीं अधिक कठिन अपने हिंदू सामाजिक आधार को एकजुट बनाए रखना हो सकता है। यहीं चुनाव का दूसरा और शायद अधिक महत्वपूर्ण पक्ष सामने आता है। मुस्लिम मतों के ध्रुवीकरण की चर्चा के साथ हिंदू मतदाताओं के भीतर बदलती प्राथमिकताओं को भी समझना होगा। मतदाता केवल जाति और धर्म के आधार पर मतदान नहीं करता। रोजगार, महंगाई, किसान, शिक्षा, युवाओं के अवसर, स्थानीय विधायक की छवि, प्रशासनिक व्यवहार और विकास की वास्तविक पहुंच भी चुनावी निर्णय को प्रभावित करते हैं। इसलिए 2027 का चुनाव केवल '80 बनाम 20' के राजनीतिक आख्यान से समझना शायद पर्याप्त नहीं होगा। समाजवादी पार्टी के लिए सबसे बड़ा अवसर यही है। अखिलेश यादव 2024 के लोकसभा चुनाव में बने सामाजिक समीकरणों को विधानसभा स्तर तक मजबूत करना चाहेंगे। पीडीए—पिछड़ा, दलित और अल्पसंख्यक का फार्मूला भाजपा के गैर—यादव पिछड़े और दलित मतदाताओं में सेंध लगाने की कोशिश करेगा। सपा के सामने चुनौती यह है कि वह अपने सामाजिक समीकरण को केवल चुनावी नारा न रहने दे, बल्कि बूथ स्तर पर संगठन और उम्मीदवार चयन के माध्यम से उसे वास्तविक राजनीतिक शक्ति में बदल सके। बसपा की भूमिका को भी नजरअंदाज करना भाजपा और सपा दोनों के लिए जोखिम भरा होगा। यदि मायावती दलित मतदाताओं के अपने पुराने आधार को पर्याप्त रूप से सक्रिय कर पाती हैं, तो कई सीटों पर त्रिकोणीय मुकाबला परिणाम बदल सकता है। कांग्रेस की स्थिति अपेक्षाकृत कमजोर दिखाई देती है, लेकिन यदि वह सपा के साथ तालमेल बनाकर लड़ती है तो विपक्षी मतों के बिखराव को कुछ हद तक रोक सकती है। लेकिन यहां पूर्व के अनुभवों के आधार पर सपा कांग्रेस से तालमेल करने से पहले फूंक—फूंक कर कदम उठा रही है। भाजपा के सामने दूसरी चुनौती अपने गठबंधन और सामाजिक समीकरणों को संतुलित रखने की है। निषाद पार्टी, सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी (सुभासपा) तथा अन्य सहयोगी दलों की अपेक्षाएं, टिकट वितरण और क्षेत्रीय नेतृत्व की महत्वाकांक्षाएं चुनाव के समय महत्वपूर्ण हो सकती हैं। भाजपा का मजबूत संगठन इन मतभेदों को नियंत्रित कर सकता है, लेकिन टिकट वितरण में छोटी—सी चूक भी कुछ क्षेत्रों में बड़े राजनीतिक नुकसान का कारण बन सकती है। अमित शाह की सक्रियता भी इस चुनाव की गंभीरता को रेखांकित करती है। उत्तर प्रदेश में भाजपा की रणनीति केवल लखनऊ से नहीं, बल्कि दिल्ली के केंद्रीय नेतृत्व की निगरानी में तैयार होने की संभावना है। दूसरी ओर योगी आदित्यनाथ की अपनी लोकप्रियता और प्रशासनिक छवि भाजपा के लिए सबसे बड़ा स्थानीय चुनावी चेहरा है। इसलिए वास्तविक चुनौती यह होगी कि योगी का नेतृत्व और केंद्रीय संगठनात्मक रणनीति कितनी प्रभावी तरह से एक—दूसरे के साथ तालमेल बैठाते हैं। इस चुनाव का सबसे महत्वपूर्ण निष्कर्ष यही होगा कि 2027 में उत्तर प्रदेश का मतदाता क्या चुनता है—स्थिरता और निरंतरता या परिवर्तन की आकांक्षा।

'रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय'



—डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय'

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।

टूटे से फिर ना जुड़े, जुड़े गाँठ पड़ जाय।।

रहीम का यह एक दोहा ही सम्पूर्ण मानव—शास्त्र है। प्रेम का धागा रेशम से भी कोमल और वज्र से भी कठोर है। रेशम टूटे तो जुड़ जाता है, पर प्रेम टूटे तो उसमें गाँठ पड़ जाती है। और गाँठ वाला प्रेम, प्रेम नहीं रहता, वह बोझ बन जाता है। इसलिए संत कहते हैं — इस धागे को बचाना ही सबसे बड़ी साधना है।

प्रेम ही ईश्वर का साकार रूप है। ईश्वर को किसी ने देखा नहीं, पर प्रेम को सबने अनुभव किया है। माँ के आँचल में, पिता के आशीर्वाद में, गुरु की कृपा में, मित्र की निःस्वार्थ सहायता में — जहाँ प्रेम है, वहाँ ईश्वर का ही साकार रूप है।

कबीर ने कहा —

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।

ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।।

प्रेम ही वह ढाई आखर है, जिसे पढ़कर मनुष्य पंडित ही नहीं, महात्मा बन जाता है। तुलसीदास जी ने भी रामचरितमानस में लिखा —

रामहि केवल प्रेम पियारा। जान लेहु जो जानन हारा।।

भगवान को न यज्ञ प्रिय है, न दान, न तप — उन्हें केवल प्रेम प्रिय है। प्रेम में वह शक्ति है जो जगत के नियंता को भी अपने वश में कर लेती है। बड़े—बड़े तपस्वी जिसे ध्यान से नहीं पा सके, उसे गोपियों ने प्रेम से पा लिया।

प्रेम में ईश्वर नंगे पाँव दौड़ते हैं।भक्ति साहित्य का सबसे मधुर सत्य यही है कि प्रेम में ईश्वर को नियम भी तोड़ने पड़ते हैं। वे वैकुण्ठ का सिंहासन छोड़कर भक्त के द्वार पर नंगे पाँव दौड़कर आते हैं।

द्रौपदी ने जब प्रेम से पुकारा — ष्हे गोविन्द!ष् तो भगवान ने वस्त्र का अवतार ले लिया। गजेंद्र ने जब प्रेम से पुकारा, तो वे गरुड़ को छोड़कर पैदल ही दौड़ पड़े। नरसी मेहता के लिए उन्होंने हुंडी भर दी, मीरा के लिए विष को अमृत कर दिया।

मीरा कहती हैं —

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई।

जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई।।

यह प्रेम ही था जिसने राजरानी मीरा को वृन्दावन की गलियों में नाचने पर विवश कर दिया।

रसखान मुसलमान होकर भी कृष्ण प्रेम में डूब गए ।

मानुष हौं तो वही रसखानि बसौं बस गोकुल गाँव के ग्वारन।

जो पशु हौं तो कहा बस मेरो चरौं नित नंद की धेनु मँझारन।।

प्रेम ने धर्म की दीवारें गिरा दीं। प्रेम में ईश्वर भक्त का सेवक बन जाता है।

प्रेम में ऊँच—नीच, जाति—पाँति, शुद्ध—अशुद्ध का कोई भेद नहीं रहता। शबरी भीलनी थी, समाज की दृष्टि में निम्न, पर प्रेम की दृष्टि में सर्वोच्च। उसने वर्षों तक प्रभु श्रीराम की प्रतीक्षा की। जब राम आए, तो शबरी ने प्रेम से बेर चख—चख कर दिए।

लोकमर्यादा कहती है — जूठा बेर नहीं खिलाना चाहिए, पर प्रेम की मर्यादा कहती है — जो प्रेम से चखा गया हो, वही सबसे पवित्र है। राम ने उन जूठे बेरों को अमृत समझकर खाया।

इसी प्रकार विदुर ने प्रेम से केले के छिलके खिलाए, भगवान ने उन्हें अमृत समझकर ग्रहण किया। सुदामा ने प्रेम से मुट्ठी भर चावल दिए, भगवान ने उन्हें त्रिलोक का वैभव दे दिया।

प्रेम के वशीभूत होकर ईश्वर मनवांछित वरदान देने में भी कोई संकोच नहीं करते।

दशरथ और राम का प्रेम केवल पिता और पुत्र का प्रेम ही नहीं है अपितु मर्यादा की पराकाष्ठा है। पिता का पुत्र—प्रेम ऐसा कि राम के वनवास पर दशरथ ने प्राण ही त्याग दिए। यह प्रेम ही था।

यशोदा और कृष्ण का अद्भुत प्रेम संसार में अमर है । यशोदा ने कृष्ण को माखन चोर कहकर भी बाँधा तो प्रेम की डोरी से बाँधा। भगवान उस डोरी से बँध गए।

हनुमान और राम का प्रेम अनुपम उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। हनुमान का प्रेम सेवक—प्रेम की पराकाष्ठा है। उन्होंने अपना हृदय चीरकर दिखा दिया कि उसमें राम ही बसते हैं।

ईसा मसीह ने कहा — ष्अपने शत्रु से भी प्रेम करो।ष् प्रेम की यही सर्वोच्च परिभाषा है। प्रेम बिना यह जग है सूना, प्रेम बिना सब धूल है।प्रेम की डोर से बँधा है, ये सारा संसार फूल है।।प्रेम से ही खिलती हैं कलियाँ, प्रेम से महकता है चमन । प्रेम से ही जीत लेता है, भक्त अपने भगवान का मन।। नफरत की आँधी में जलता, ये जग प्रेम को तरसे ह । आओ हम सब प्रेम बाँटें, यही सच्चा मानव धर्म है।तोड़ो न तुम प्रेम का धागा, यह रेशम से भी नाजुक है। टूट गया तो गाँठ पड़ेगी, फिर जुड़ना बड़ा मुश्किल है।

आज के समाज में प्रेम के धागे की आवश्यकता है।

आज का समाज ईर्ष्या, नफरत, द्वेष और स्वार्थ की आग में जल रहा है। भाई—भाई में झगड़ा है, पड़ोसी—पड़ोसी में वैमनस्य है, धर्म—धर्म में कटुता है। इसका एकमात्र कारण है — प्रेम के धागे का टूटना।

हमने विकास तो बहुत किया, तकनीक में आगे बढ़ गए, पर हृदय से पीछे रह गए। सोशल मीडिया पर प्रेम के स्थान पर नफरत फैल रही है।

ऐसे में रहीम का यह दोहा आज और अधिक प्रासंगिक हो जाता है। आइए, इस संसार को हम प्रेम के धागे में बाँधें। जहाँ नफरत है, वहाँ प्रेम बोएँ। जहाँ ईर्ष्या है, वहाँ क्षमा का बीज डालें।

प्रेम ही जीवन है । प्रेम के बिना जीवन रेगिस्तान है प्रेम के साथ जीवन नंदन वन है। प्रेम ही मानवता का धर्म है, प्रेम ही राष्ट्र की एकता का सूत्र है, प्रेम ही विश्व शांति का मार्ग है। यदि हम ईर्ष्या और नफरत को अपने मन से सदा के लिए दूर कर दें और सर्वत्र प्रेम का प्रतिदान करें, तो यही धरती स्वर्ग बन जाएगी।

आइए, संकल्प लें —

हम प्रेम के धागे को कभी टूटने नहीं देंगे, कभी चटकने नहीं देंगे , क्योंकि टूटे हुए धागे में गाँठ पड़ जाती है, और गाँठ वाला प्रेम कभी पहले जैसा नहीं रहता।

निवास— 'पत्रकार भवन'
गंधियांव करछना, प्रयागराज
उ०प्र० पिनकोड 212301
मोबाइलः 9935 205341
अथवा 8299 280 381

वोट चोरी के खिलाफ विपक्ष की रैली से बदलाव की उम्मीद

जगदीश रत्तनानी

मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार को हटाने के आंदोलन के सिलसिले में 1 नवंबर को हुई विपक्ष की संयुक्त रैली अहम मोड़ है जो उन्हें बचाने और बढ़ावा देने वाले राजनीतिक आका के खिलाफ भी है। इस स्थिति में, विपक्ष अब मौजूदा चुनाव आयोग के ढांचे के भीतर रहकर काम नहीं कर सकता क्योंकि ऐसा करने पर मुख्य चुनाव आयुक्त के खिलाफ उनके आंदोलन की विश्वसनीयता पूरी तरह खत्म हो जाएगी। 2027 की शुरुआत में उत्तर प्रदेश और चार अन्य राज्यों में चुनाव होने हैं तो ऐसे में स्थिति बिल्कुल साफ है— या तो सरकार मुख्य चुनाव आयुक्त को बदलने का कोई रास्ता निकाले (हालांकि ऐसा करने पर उसे भारी शर्मिंदगी झेलनी पड़ेगी क्योंकि सरकार ने खुद ज्ञानेश कुमार का बचाव उनसे कहीं ज्यादा किया है) या फिर विपक्ष उनके नेतृत्व में होने वाले चुनावों से दूर रहे। कई लोगों ने पहले ही मांग की है कि अगर ज्ञानेश कुमार अपने पद पर बने रहते हैं तो चुनावों का बहिष्कार किया जाए। अगर विपक्ष चुनावों का बहिष्कार करता है तो चुनाव एक तमाशा बनकर रह जाएंगे जिसका सीधा फायदा भाजपा को मिलेगा। यहां ऐसा कोई भी बीच का रास्ता नहीं है जिससे सरकार अपनी साख बचा सके और काम—काज पहले की तरह चलता रहे। राजनीतिक टकराव के लिहाज से यह एक खतरनाक मोड़ है, और राष्ट्रीय राजनीति में यह एक तरह से करो या मरो की स्थिति है। दोनों ही स्थितियों में सरकार अपने ही बुने जाल में फंस गई है जबकि विपक्ष एक ऐसी लड़ाई में उलझ गया है जिससे पीछे हटना उसके लिए मुमकिन नहीं है। सरकार के लिए आसान रास्ता यह था कि वह मुख्य चुनाव आयुक्त से कुछ दूरी बनाए रखती या कम से कम दूरी बनाए रखने का दिखावा ही कर लेती। खासकर जब मुख्य चुनाव आयुक्त के कार्यकाल में विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के तहत बड़े पैमाने पर मतदाताओं के नाम सूची से हटाए गए, जिसका बचाव करना लगभग असंभव है। मतदाता सूची से जुड़ी ये समस्याएं ज्ञानेश कुमार के आने से पहले ही शुरू हो गई थीं— विपक्ष के आरोप 2024 के लोकसभा और महाराष्ट्र चुनावों के समय से ही चले आ रहे हैं। बड़े पैमाने पर किए बदलावों ने सबूत पीछे छोड़ दिए हैं जिससे यह चोरी साफ तौर पर नजर आ रही है। जैसे—जैसे विरोध ा प्रदर्शन तेज हो रहे हैं, भाजपा की प्रतिक्रिया खुद को सही साबित करने की कोशिश और विपक्ष की आवाज को दबाने वाली रही है। जैसे—जैसे यह धारणा मजबूत होती है कि भाजपा और चुनाव आयोग एक साथ हैं, राज्यों में उसकी चुनावी जीत और 2024 के लोकसभा चुनावों को लेकर भी सवाल उठने लगते हैं।

भाजपा के आक्रामक जवाब से विपक्ष की एकता को लेकर उसकी चिंता सामने आई

के रवींद्रन

मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग को लेकर हो रहे विरोध प्रदर्शनों पर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) का बढ़ता आक्रामक जवाब बताता है कि सत्ताधारी पार्टी को अपनी राजनीतिक अजेयता पर उतना भरोसा नहीं है जितना उसके सार्वजनिक बयानों से लगता है। विपक्ष की लामबंदी को खारिज करने में खर्च की गई बहुत ज़्यादा ऊर्जा, साथ ही राजनीतिक गठबंधनों को फिर से बनाने की नई कोशिशें, राष्ट्रीय राजनीतिक बहस की बदलती दिशा को लेकर अंदरूनी चिंता की ओर इशारा करती हैं। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह का यह कहना कि कांग्रेस 2029 के संसदीय चुनाव नहीं जीत सकती, खास तौर पर चौंकाने वाला है। मौजूदा विवाद चुनाव आयोग की विश्वसनीयता, वोटर लिस्ट की ईमानदारी और वोटरों को वोट देने से वंचित करने के आरोपों से जुड़ा है। फिर भी भाजपा का जवाब बार—बार सरकार बदलने की उम्मीदों, नरेंद्र मोदी के चुनावी भविष्य और सरकार को हटाने में विपक्ष की कथित नाकामी की तरफ मुड़ गया है। यह एक बड़ा राजनीतिक बदलाव है। एक सरकार जो अपनी स्थिति से पूरी तरह खुश है, वह शायद चुनावी प्रक्रिया का बचाव करने और प्रदर्शनकारियों द्वारा उठाए गए खास सवालों के जवाब देने पर ध्यान देगी। इसके बजाय, सत्ताधारी पार्टी ने संस्थागत जिम्मेदारी पर विवाद को अपने चुनावी दबदबे पर एक और जनादेश में बदलने की कोशिश की है। ऐसा जवाब निश्चित रूप से भाजपा नेतृत्व द्वारा दिखाए गए भरोसे पर सवाल उठाने का आधार देता है। जंतर—मंतर पर कॉकरोच जनता पार्टी के नेतृत्व में किया गया आंदोलन शुरू में ज्ञानेश कुमार और मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के खिलाफ था। इसका महत्व चुनावी प्रशासन पर एक तकनीकी विवाद को लोकतांत्रिक संस्थान की निष्पक्षता पर सवाल उठाने वाले एक बड़े जन आंदोलन में बदलने की संभावना में था। भाजपा इस आंदोलन को सीमित राजनीतिक नतीजों के साथ एक अलग विरोध के रूप में देख सकती थी। हालांकि, अभियान का राजनीतिक रूप से सामना करने के उसके फैसले ने विवाद को चुनाव आयोग से आगे बढ़ाने में मदद की है। इसलिए सरकार की आलोचना करने वालों को चुनावी शिकायतों को संवैधानिक संस्थाओं और सत्ता की शक्ति के बीच संबंधों के बारे में बड़े सवालों से जोड़ने का मौका मिल गया है।दिल्ली के रामलीला मैदान में 1 नवंबर की रैली ने इस टकराव को और ज़्यादा सामने ला दिया।

राहुल गांधी, मल्लिकार्जुन खड़गे, ममता बनर्जी, अखिलेश यादव और दूसरे विपक्षी नेताओं की मौजूदगी ने दिखाया कि इस विवाद ने उन पार्टियों को एक साथ लाने के लिए काफी राजनीतिक तूल पकड़ लिया था जिनके क्षेत्रीय हितों ने अक्सर मिलकर काम करने में रुकावट डाली है। भाजपा की प्रतिक्रिया, भीड़ के अपने अंदाजे से बिल्कुल अलग था। पार्टी के प्रवक्ता संबित पात्रा ने रैली को विफल बताया और कहा कि लगभग 40 प्रतिशत मैदान खाली रहा। दूसरे भाजपा नेताओं ने विपक्ष के भीड़ के अंदाजे पर सवाल उठाए और ऑर्गनाइजर पर गुमराह करने वाली इमेज के जरिए उपस्थिति को बढ़ा—चढ़ाकर बताने का आरोप लगाया। असल में भीड़ कितनी थी, इस पर अभी भी बहस चल रही है, और इस बहस को पक्के तौर पर साबित करने के लिए कोई अलग से तय आंकड़ा नहीं है। फिर भी, रैली को बदनाम करने का भाजपा का पक्का इरादा एक साफ राजनीतिक सवाल खड़ा करता है। अगर यह जमावड़ा सच में कोई खास नहीं था, तो इसकी कोई अहमियत न दिखाने पर इतना ध्यान क्यों दिया गया? इसका जवाब शायद तुरंत भीड़ की ताकत और लंबे समय के राजनीतिक जोश के बीच के फर्क में छिपा हो। एक रैली से चुनाव के नतीजे तय नहीं होते, लेकिन वोटरों से जुड़ी किसी शिकायत के इर्द—गिर्द लगातार अभियान चलाने से एक ऐसा सांगठनिक मंच बन सकता है जो असली झगड़े से कहीं आगे तक जाता है। भाजपा इस फर्क को ज़्यादातर राजनीतिक संगठनों से बेहतर समझती है। इसकी अपनी बढ़त में ऐसे आंदोलनों ने मदद की जिन्होंने लोगों की नाराजगी को लगातार राजनीतिक लामबंदी में बदल दिया। इसलिए यह मानना गलत होगा कि इसका नेतृत्व कई बड़ी विपक्षी पार्टियों के प्रदर्शनों को बिना चुनावी असर के सिर्फ तमाशा मानती है। रामलीला मैदान में लामबंदी के मायने रखने का एक और कारण है। ऐतिहासिक रूप से विपक्षी एकता तब सबसे असरदार रही है जब पार्टियों को कोई ऐसा साझा मुद्दा मिल जाता है जो उनके मतभेदों को दूर कर सके। चुनावी ईमानदारी ठीक ऐसा ही मंच देती है क्योंकि हर विपक्षी पार्टी की दिलचस्पी यह पक्का करने में होती है कि मतदाता का नाम दर्ज होना, चुनावी प्रशासन और मतदान गिनती की प्रक्रिया पर जनता का भरोसा बना रहे। महाराष्ट्र के घटनाक्रम भाजपा के रणनीतिगत गणना का ज़्यादा ठोस इशारा देते हैं। विपक्ष की रैली के ठीक एक दिन बाद, नेशनलिस्ट कांग्रेस पार्टी के अजित पवार गुट के वरीय नेताओं ने अमित शाह से मुलाकात की। इस दौरान विरोधी एनसीपी गुटों को एक साथ एनडीए में लाने की संभावना पर चर्चा हुई। इस पहल का राजनीतिक महत्व स्पष्ट है। विपक्ष को एकजुट करने के प्रयासों में शरद पवार की भागीदारी ने इंडियाश गठबंधन की विश्वसनीयता बढ़ाई है। अगर एनडीए के दायरे में एनसीपी फिर से एक हो जाती है, तो इससे विपक्षी गठबंधन कमजोर होगा, जबकि महाराष्ट्र में सत्ताधारी गठबंधन की स्थिति मजबूत हो जाएगी।

न महंगे कपड़े, न ग्लैमरस फोटोशूट... काउच पर बैठकर सामंथा रूथ प्रभु ने फ्लॉन्ट किया बेबी बंप



अभिनेत्री सामंथा रूथ प्रभु, जो अपने पति राज निदिमोरु के साथ जल्द ही मां बनने वाली हैं, सोशल मीडिया के जरिए अपनी प्रेग्नेंसी के सफर की झलक साझा कर रही हैं। खुशी फिल्म की अभिनेत्री ने हाल ही में एक नई तस्वीर पोस्ट की, जिसमें वह अपना बेबी बंप दिखा रही हैं। हालांकि, किसी भव्य और ग्लैमरस मैटरनिटी फोटोशूट के बजाय, उन्होंने एक सादा और आरामदायक तरीका चुना और काउच पर आराम से पोज दिया। इंस्टाग्राम पर सामंथा ने अपनी एक अनौपचारिक (कैंडिड) तस्वीर पोस्ट की, जिसमें वह काउच पर आराम कर रही हैं। सनग्लासेस पहने अभिनेत्री को आराम से बैठे हुए और प्यार से अपने बेबी बंप को थामे हुए देखा जा सकता है। उन्होंने एक छोटा और मजेदार कैप्शन लिखा, इसे ही मेरा मैटरनिटी शूट समझें। तस्वीर में ऊ अंटावा फेम अभिनेत्री लाल टॉप और सफेद

> “
> सोशल मीडिया के जरिए अपनी प्रेग्नेंसी के सफर की झलक साझा कर रही हैं। खुशी फिल्म की अभिनेत्री ने हाल ही में एक नई तस्वीर पोस्ट की, जिसमें वह अपना बेबी बंप दिखा रही हैं। हालांकि, किसी भव्य और ग्लैमरस मैटरनिटी फोटोशूट के बजाय, उन्होंने एक सादा और आरामदायक तरीका चुना और काउच पर आराम से पोज दिया।

ट्राउजर पहने नजर आ रही हैं। उन्होंने काले सनग्लासेस के साथ अपने इस कैजुअल लुक को पूरा किया। तस्वीर पोस्ट करते ही फैंस ने कमेंट सेक्शन में उन पर खूब प्यार बरसाया और प्यारे–प्यारे मैसेज लिखे। एक प्रशंसक ने उन्हें अब तक की सबसे कूल होने वाली मां बताया, तो दूसरे ने लिखा, प्लॉट ट्विस्ट बच्चा अभी से सारी लाइमलाइट चुरा रहा है। एक अन्य ने लिखा, जल्द ही जूनियर सामंथा आने वाली है। सामंथा और राज निदिमोरु अपने पहले बच्चे का स्वागत करने वाले हैं। दोनों ने 1 दिसंबर, 2025 को कोयंबटूर के ईशा योग केंद्र में एक निजी समारोह में शादी की थी। कुछ हफ्ते पहले, सामंथा और राज ने कोयंबटूर के ईशा फाउंडेशन में सीमंतम (पारंपरिक गोद भराई समारोह) आयोजित करके अपने जीवन के इस खास पड़ाव का जश्न मनाया था। अभिनेत्री ने जून 2026 में अपनी फिल्म मा इंटी बंगारम के हैदराबाद सक्सेस मीट के दौरान अपनी प्रेग्नेंसी की खबर साझा की थी। मीडिया से बात करते हुए उन्होंने बताया कि अपने मौजूदा काम पूरे करने के बाद, वह कुछ समय के लिए काम से ब्रेक लेंगी ताकि अपने जीवन के इस नए चरण पर ध्यान दे सकें। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि यह ब्रेक कुछ समय के लिए ही होगा और मां बनने के बाद वह फिर से बड़े पर्दे पर वापसी करेंगी।



सिद्धार्थ–कियारा ने अपनी शादी के किस्से साझा किए, शाहिद कपूर के साथ करण जौहर के एक मजेदार पल को याद किया

बॉलीवुड के सबसे पसंदीदा और चर्चित जोड़ों में से एक, सिद्धार्थ मल्होत्रा और कियारा आडवाणी, एक बार फिर अपने चार्म, हंसी–मजाक और खूबसूरत केमिस्ट्री से फैंस का दिल जीतने के लिए तैयार हैं। यह पॉपुलर कपल मशहूर टॉक शो श्कॉफी विद करणश के सीजन 9 के आगामी एपिसोड में नजर आने वाला है। मंगलवार को मेकर्स ने इस स्पेशल एपिसोड का प्रोमो जारी किया, जिसने सोशल मीडिया पर आते ही धूम मचा दी है। सैफ अली खान और करीना कपूर खान के शानदार एपिसोड के बाद, अब सिद्धार्थ और कियारा काउच पर अपनी लव स्टोरी और शादी से जुड़े बेहद दिलचस्प राज खोलते हुए दिखाई देंगे।

प्रोमो में, सिद्धार्थ और कियारा अपनी शादी को याद करते हुए नजर आ रहे हैं और शादी के जश्न से जुड़ी कुछ दिलचस्प यादें साझा कर रहे हैं।

श्कॉफी विद करण 9श के एपिसोड 5 का प्रोमो आ गया है

श्कॉफी विद करण 9श का नया प्रोमो करण जौहर द्वारा सिद्धार्थ और कियारा का शो में स्वागत करने के साथ शुरू होता है। बातचीत के दौरान, करण कहते हैं, ष्आपकी शादी बहुत खास थी।ष् इसके बाद कियारा अपनी शादी का एक दिलचस्प किस्सा बताती हैं, जिसमें शाहिद कपूर भी शामिल थे। उस घटना को याद करते हुए वह कहती हैं, ष्हमने उनसे कहा कि आप इस गाने पर डांस करें।

वह आगे बताती हैं, शाहिद ने सोचा कि क्यों न स्टेज पर जाकर उनका साथ दिया जाए, लेकिन आपने (सिद्धार्थ ने) उन्हें स्टेज से हटा दिया।

'कॉफी विद करण' के अगले एपिसोड का प्रोमो इंस्टाग्राम पर शेयर करते हुए, फिल्ममेकर ने लिखा, ष्इसी काउच पर उन्होंने कियारा के साथ एक शानदार भविष्य की कल्पना की थी, और अब हम उनकी खुशहाल जिंदगी के बारे में बात कर रहे हैं! यह श्कॉफी डेटश कुछ ज्यादा ही खास है। श्कॉफी विद करणश सीजन 9, एपिसोड 5, बुधवार शाम 7 बजे, सिर्फ जियोहॉटस्टार (श्रपवभ्वजेजंत) पर श्द पीकॉक हबश (जैम च्मंबवबा भ्नइ) पर स्ट्रीम होगा।

सिद्धार्थ मल्होत्रा घ्और कियारा आडवाणी की लव स्टोरी

बता दें कि सिद्धार्थ मल्होत्रा घ्और कियारा आडवाणी ने 7 फरवरी 2023 को राजस्थान के सूर्यगढ़ पैलेस में एक निजी समारोह में शादी की थी। उनकी शादी में फिल्म इंडस्ट्री से उनके करीबी दोस्त और परिवार के सदस्य शामिल हुए थे। कहा जाता है कि 2021 की फिल्म श्शेरशाहश में एक साथ काम करने के दौरान दोनों को प्यार हो गया था। फैंस ने उनकी ऑन–स्क्रीन केमिस्ट्री को काफी पसंद किया था। कुछ समय तक डेट करने के बाद, इस जोड़े ने 7 फरवरी, 2023 को शादी कर ली। बाद में उनके घर बेटी श्सरायाश का जन्म हुआ, और अब वे अपने दूसरे बच्चे के माता–पिता बनने वाले हैं।

कॉफी विद करण 9 कब और कहाँ देखें

दर्शक सिद्धार्थ मल्होत्रा घ्और कियारा आडवाणी वाले श्कॉफी विद करण 9श के नए एपिसोड को बुधवार, 11 नवंबर को शाम 7 बजे से जियोहॉटस्टार (श्रपवभ्वजेजंत) पर देख सकते हैं। शो के पिछले एपिसोड भी इस स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध हैं।

हमारी संस्कृति किसी की जान खतरे में डालने की इजाजत नहीं देती... दिवाली पर विवेक अग्निहोत्री का फूटा गुस्सा



द कश्मीर फाइल्स, द ताशकंद फाइल्स, द बंगाल फाइल्स जैसी फिल्मों के लिए मशहूर निर्देशक विवेक अग्निहोत्री ने कहा है कि भारत की संस्कृति मासूम जिंदगियों, घरों और संपत्ति को खतरे में डालने की इजाजत नहीं देती। सोमवार को, निर्देशक ने अपने एक्स अकाउंट पर मुंबई की मेयर ऋतु तावड़े के एक ट्वीट का जवाब देते हुए एक लंबा नोट लिखा। मेयर ने शहर के निवासियों से जिम्मेदारी के साथ दिवाली मनाने, सार्वजनिक सड़कों पर पटाखे न फोड़ने के बॉम्बे हाई कोर्ट के आदेश का पालन करने और प्रशासन का सहयोग करने की अपील की थी। विवेक ने बताया कि कैसे उनके घर में एक बड़ा हादसा होने से टल गया, क्योंकि उनके कुत्तों ने एक भटकते हुए रॉकेट के बारे में सबको सचेत कर दिया। उन्होंने लिखा, कल रात, एक भटकता हुआ रॉकेट हमारी बालकनी में रखे सोफे पर आ गिरा, जिससे उसमें आग लग गई। शुक्र है कि हमारे कुत्तों ने समय रहते हमें आगाह कर दिया, और आग–रोधी कपड़े की वजह से एक बड़ा हादसा होने से बच गया। हमें हमेशा से डर था कि ऐसा कुछ हो सकता है। इस बार हम किस्मत वाले थे, लेकिन बाकी पीड़ितों का क्या ? दिवाली मनाना किसे पसंद नहीं है ? लेकिन ये भटकते हुए रॉकेट हमारी संस्कृति का गौरव नहीं हैं, बल्कि ये आग का खतरा हैं। हमारी महान संस्कृति हमें मासूम जिंदगियों, घरों और संपत्ति को खतरे में डालने की इजाजत नहीं देती। आपकी अपील शायद थोड़ी देर से आई है, और अगर इसे सख्ती से लागू नहीं किया गया, तो इसका कोई खास मतलब नहीं रह जाएगा। उन्होंने आगे कहा, सबसे अहम बात यह है कि जिम्मेदारी सिर्फ पटाखे फोड़ने वालों की ही नहीं होनी चाहिए। जो लोग जागरूकता फैलाने, कोर्ट के आदेशों को लागू करने, आग से सुरक्षा सुनिश्चित करने और इस तरह के नियमों के उल्लंघन को रोकने के लिए जिम्मेदार हैं, उन्हें भी जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए। मुझे उम्मीद है कि प्रशासन मुंबई में लगी आग की घटनाओं की जांच करेगा और जहां भी लापरवाही बरती गई है या कानून लागू करने में विफलता हुई है, वहां जिम्मेदारी तय करेगा। उन्होंने आगे कहा, जिम्मेदारी के पद पर बैठा व्यक्ति जो कुछ भी करता है, बाकी लोग भी उसका अनुसरण करते हैं। वे जो मानक तय करते हैं, समाज उन्हीं के अनुसार जीने लगता है।

गार्ड की मौत पर छलका दिव्यांका त्रिपाठी-विवेक दहिया का दर्द, सुनाई आपबीती



अभिनेत्री दिव्यांका त्रिपाठी ने इंस्टाग्राम पर एक भावुक पोस्ट साझा कर दिवाली से पहले अपनी बिल्डिंग में लगी भीषण आग के दर्दनाक हादसे को याद किया है। इस हादसे में उनका परिवार तो सुरक्षित बच गया, लेकिन उनके करीबी सिक्योरिटी गार्ड धनपत की जान चली गई, जिसे उन्होंने एक गहरा नुकसान बताया। टीवी की मशहूर अभिनेत्री दिव्यांका त्रिपाठी और उनके पति विवेक दहिया ने कुछ समय पहले एक बड़े हादसे का सामना किया था। दिवाली से ठीक पहले उनकी बिल्डिंग में भीषण आग लग गई थी, जिसमें उन्होंने अपने बेहद करीबी और भरोसेमंद सिक्योरिटी गार्ड धनपत अंकल को हमेशा के लिए खो दिया था। इस दर्दनाक हादसे और अपने गहरे नुकसान को बयां करते हुए दिव्यांका ने इंस्टाग्राम पर एक बेहद भावुक पोस्ट शेयर कर उस वक्त की आपबीती सुनाई। दिव्यांका ने अपनी बिल्डिंग में लगी आग और गार्ड धनपत की तस्वीर शेयर करते हुए उस खौफनाक रात की दास्तान साझा की। उन्होंने लिखा कि कुछ दुख ऐसे होते हैं जो जिंदगी भर की खामोशी दे जाते हैं। जब वे अपने दोनों बच्चों को पहली बार घर लेकर आए थे, तो उनका सबसे पहले प्यार से स्वागत करने और आशीर्वाद देने वालों में धनपत अंकल ही थे। वे चाहते थे कि बच्चे उनके साथ खेलते हुए बड़े हों, लेकिन किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। दिव्यांका ने बताया कि दिवाली से ठीक एक रात पहले उनकी बिल्डिंग में आग लगी थी। उस शाम उन्हें बाहर निकलना था, लेकिन किसी न किसी वजह से उनका जाना टलता रहा। इसी वजह से हादसे के वक्त पूरा परिवार घर पर मौजूद था और समय रहते खतरे को भांपते हुए वे बच्चों, परिवार और स्टाफ के साथ सुरक्षित बाहर निकल सके थे। शुरुआत में लगा कि सिर्फ सामान का नुकसान हुआ है, लेकिन बाद में गार्ड धनपत के निधन की खबर ने उन्हें पूरी तरह झकझोर कर रख दिया था।

मानने को तैयार नहीं थे कि अंकल अब नहीं रहे

इस दुखद खबर का जिक्र करते हुए दिव्यांका ने लिखा, ष्मैं और विवेक इस बात को मानने के लिए तैयार ही नहीं थे। हम एक दोस्त के घर बैठकर बस यही दुआ कर रहे थे कि काश यह खबर झूठी निकले। दिवाली के बाद धीरे–धीरे बिजली, गैस और लिफ्ट की सुविधा बहाल हो गई थी, लेकिन पूरी विंग में सन्नाटा पसरा रहा। वजह सिर्फ बिल्डिंग का नुकसान नहीं, बल्कि एक कीमती जिंदगी का चले जाना था। उस आग ने हमारे दिल में एक ऐसा अंधेरा कर दिया, जिसे कोई रोशनी दूर नहीं कर सकती।

बच्चों को बताएंगे धनपत अंकल की नेकी की कहानी

दिव्यांका ने अपने नोट में भावुक होते हुए लिखा कि धनपत अंकल सिर्फ गार्ड नहीं, बल्कि उनकी रोजमर्रा की जिंदगी का अटूट हिस्सा थे। उन्होंने लिखा, जब हमारे दोनों बेटे बड़े होंगे, तो हम उन्हें जरूर बताएंगे कि कैसे एक भले इंसान ने घर आते ही उन्हें आशीर्वाद दिया था। आपने हमें सिखाया कि किसी भी इंसान की मौजूदगी को कभी हल्के में नहीं लेना चाहिए, क्योंकि हमें नहीं पता कि कौन सा पल आखिरी साबित हो जाए।



इस वीकेंड ट्राई करें अचारी दाल पूरी, इसका लाजवाब स्वाद कर देगा दीवाना

अचारी दाल पूड़ी आप न सिर्फ हल्के–फुल्के नाश्ते बल्कि तेज भूख को भी शांत कर सकती हैं। बाहर के एकदम फूली हुई और खस्ता हुई अचारी दाल पूड़ी खाने के लिए आपको किसी सब्जी या फिर अचार की जरूरत नहीं होगी।

कई बार हमारे मन में अचानक से मसालेदार और चटपटा खाने का मन करता है। वहीं बाजार में मिलने वाली चीजें या फिर घर पर कोई डिश बनाते हैं। लेकिन कई बार कुछ समझ नहीं आता है कि ऐसा क्या बनाएं, जो स्वाद में मजेदार होने के साथ दोपहर या रात के खाने में अलग से न बनाना पड़े। लेकिन अगर आपका कुछ चटपटा और मसालेदार खाने का मन कर रहा है। तो अचारी दाल पूड़ी ट्राई कर सकती हैं। अचारी दाल पूड़ी आप न सिर्फ हल्के–फुल्के नाश्ते बल्कि तेज भूख को भी शांत कर सकती हैं। बाहर के एकदम फूली हुई और खस्ता हुई अचारी दाल पूड़ी खाने के लिए आपको किसी सब्जी या फिर अचार की जरूरत नहीं होगी। आप इस पूड़ी को रायता, दही और गरमागरम चाय के साथ सर्व कर सकती हैं।

सामग्री

आटा – 5 कटोरी
मूंग की दाल – 1 कप
अजवाइन – 1/2 चम्मच
साबुत जीरा – 1/2 चम्मच
चना दाल – 1/2 कप
जीरा पाउडर – 1/2 चम्मच
धनिया पाउडर – 1/2 चम्मच
लाल मिर्च पाउडर – 1/2 चम्मच से भी कम
हरी मिर्च – 1
हींग – 1/2 चम्मच
अदरक कटी हुई – 1/2 चम्मच
हल्दी – 1 चुटकी
आम के आचार का तेल – 5 चम्मच
स्वादानुसार नमक
आवश्यकता अनुसार तेल

ऐसे बनाएं

अचारी दाल पूड़ी बनाने के लिए उड़द दाल को रात भर के लिए पानी में भिगोकर रख दें। फिर दाल के अच्छे से फूल जाने पर इसको 4–5 पानी से छानकर अलग कर लें। वहीं दूसरी ओर पूड़ी बनाने के लिए सबसे पहले मुलायम और मोवन लगा आटा गूंथ लें। आटे में अजवाइन और नमक डालकर गरम पानी से गूंथें। फिर दाल को उबाल लें और जब दाल आधी पक जाए, तो दाल को छोंकने के लिए गैस पर पैन चढ़ाएं। अब पैन में तेल डालकर हींग, जीरा, बारीक कटी हुई हरी मिर्च और अदरक डालकर थोड़ा सा चलाएं। इसके बाद दाल में हल्दी, नमक, जीरा, धनिया पाउडर और लाल मिर्च पाउडर डालकर थोड़ा सा पानी छिड़ककर अच्छे से मिलाएं। फिर इसको ढककर 4–5 मिनट के लिए छोड़ दें। ऐसे ही 2–3 बार पानी छिड़कर दाल पकाएं और जब दाल पूरी तरह से पक जाए, तो गैस की फ्लेम को लो कर दें। अब चलाते हुए दाल को सुखाकर 2 चम्मच अचार का तेल डालकर मिक्स करें। फिर आटे की छोटी–छोटी लोइयां बनाकर भुनी मसाला दाल को भरें। अब इसको चारों ओर से पैक करके सूखा आटा लगाकर इसको बेलें। अब पूड़ी को तलने के लिए तेल को गर्म करें। फिर एक–एक करके पूड़ी को डालकर गोल्डन ब्राउन होने तक पकाएं।

तितली जैसी पत्तियों में छुपा है नेचुरल इलाजः थायराइड और हार्मोनल प्रॉब्लम का असरदार हल



आयुर्वेद में कहा गया है कि प्रकृति हर बीमारी का इलाज अपने अंदर समेटे हुए है। ऐसा ही एक औषधीय पौधा है कचनार । इसकी पत्तियां बिल्कुल तितली के आकार की होती हैं, और यही आकार इसे विशेष बनाता है। आयुर्वेद के अनुसार, यही आकृति प्रतीक है थायराइड ग्लैंड की, जो गर्दन में तितली की तरह फैली होती है। इसी कारण कचनार को थायराइड जैसी बीमारियों में बेहद लाभकारी माना गया है। यह पौधा न केवल थायराइड बल्कि हार्मोनल असंतुलन, पीसीओएस, और स्किन डिजीज जैसी कई समस्याओं में प्राकृतिक औषधि की तरह काम करता है।

क्या होता है थायराइड और क्यों होती है गड़बड़ी?

थायराइड एक छोटी तितली के आकार की ग्रंथि होती है जो हमारी गर्दन के सामने, एडम्स एप्पल के नीचे स्थित होती है। यह ग्रंथि शरीर के एंडोक्राइन सिस्टम का अहम हिस्सा है, जो दो हार्मोन टी3 (ट्राईआयोडोथायरोनिन) और टी4 (थायरोक्सिन) बनाती है। ये हार्मोन शरीर की मेटाबॉलिज्म रेट, विकास, ऊर्जा उत्पादन और हार्मोनल संतुलन को नियंत्रित करते हैं। अगर थायराइड हार्मोन ज्यादा बनता है, तो इसे हाइपरथायरायडिज्म कहा जाता है, और अगर कम बनता है, तो इसे हाइपोथायरायडिज्म कहते हैं। आज के समय में महिलाओं में यह समस्या बहुत आम हो गई है तनाव, गलत खान–पान, नींद की कमी और हार्मोनल गड़बड़ी इसके बड़े कारण हैं।

थायराइड मरीज है तो जान लें क्या खाना है क्या नहीं?

आधुनिक दवाएं या प्राकृतिक उपाय?

थायराइड के लिए बाजार में अनेक एलोपैथिक दवाएं उपलब्ध हैं, लेकिन वे केवल लक्षणों को कंट्रोल करती हैं, बीमारी को पूरी तरह खत्म नहीं करतीं। साथ ही, इन दवाओं के कुछ साइड इफेक्ट्स भी होते हैं जैसे नींद में कमी, वजन बढ़ना या चिड़चिड़ापन। आयुर्वेद इसके लिए एक प्राकृतिक विकल्प सुझाता है कचनार। यह पौधा बिना किसी साइड इफेक्ट के शरीर में हार्मोनल बैलेंस को बहाल करने का काम करता है।

कचनार कैसे करता है थायराइड को कंट्रोल?

कचनार पौधे के पत्ते, फूल, छाल और तने में औषधीय गुण होते हैं। आयुर्वेदिक ग्रंथों के अनुसार, यह पौधा "गांठ" या "गुल्म" यानी शरीर में बनने वाली असामान्य सूजन या ग्रंथियों को खत्म करने में सक्षम है। कचनार थायराइड ग्लैंड की गतिविधियों को संतुलित करता है यानी अगर हार्मोन का स्तर कम है तो यह उसे बढ़ाता है, और अगर अधिक है तो उसे सामान्य करता है। दिलचस्प बात यह है कि इसकी पत्तियां थायराइड ग्लैंड की तरह ही तितली के आकार की होती हैं आयुर्वेद में इसे "समान आकार औषधि सिद्धांत" कहा गया है, यानी जिस पौधे का आकार जिस अंग जैसा हो, वह उसी अंग के रोगों में उपयोगी होता है।

हार्मोनल और मेटाबॉलिक बैलेंस में सहायक

कचनार सिर्फ थायराइड तक सीमित नहीं है। यह पूरे शरीर के हार्मोनल सिस्टम को संतुलित करने में मदद करता है। यह महिलाओं में पीसीओएस, मासिक धर्म की अनियमितता, और हार्मोनल बदलावों से जुड़ी समस्याओं में भी उपयोगी है। यह पौधा शरीर के मेटाबॉलिज्म को बूस्ट करता है, जिससे ऊर्जा स्तर बढ़ता है और वजन नियंत्रित रहता है।

कचनार गुग्गुलुः एक शक्तिशाली आयुर्वेदिक दवा

कचनार से बनने वाली एक विशेष औषधि है कचनार गुग्गुलु। यह दवा कचनार के अर्क और गुग्गुल के संयोजन से बनाई जाती है। यह थायराइड, पीसीओएस, फाइब्रॉएड, ट्यूमर, लिपोमा और स्किन डिजीज जैसी कई बीमारियों में प्रभावी है। कचनार गुग्गुलु शरीर में जमा विषाक्त पदार्थों (टॉक्सिन्स) को बाहर निकालने में मदद करता है और लसीका तंत्र को साफ करता है। इससे सूजन, गांठें, और ग्रंथियों की गड़बड़ियां दूर होती हैं।

कचनार के अन्य स्वास्थ्य लाभ

त्वचा रोगों जैसे दाद, खुजली, एक्जिमा में राहत देता है। ब्लड शुगर कंट्रोल करता है इसके पत्तों का अर्क डायबिटीज में फायदेमंद माना गया है। वजन घटाने में मदद करता है क्योंकि यह शरीर की अतिरिक्त चर्बी को पिघलाता है। पेट दर्द और मासिक धर्म के दौरान ऐंठन में इसके फूलों का काढ़ा लाभकारी होता है। सूजन और इंफेक्शन में राहत देता है क्योंकि इसमें एंटी–इंफ्लेमेटरी गुण होते हैं। यह ब्लड प्यूरीफायर यानी रक्त को शुद्ध करने का काम भी करता है।

सेवन विधि और सावधानियां

कचनार गुग्गुलु को आयुर्वेदिक चिकित्सक की सलाह से लेना चाहिए। आमतौर पर एक गोली दिन में दो या तीन बार, भोजन से पहले गुनगुने पानी के साथ लेने की सलाह दी जाती है। यदि आप थायराइड या हार्मोनल डिसऑर्डर के मरीज हैं, तो इसे बिना डॉक्टर की राय के न लें। आयुर्वेदिक दवाओं का असर धीमा लेकिन स्थायी होता है, इसलिए निरंतरता और सही जीवनशैली जरूरी है।

अंतिम सलाह

कचनार भले ही एक शक्तिशाली प्राकृतिक औषधि हो, लेकिन हर व्यक्ति का शरीर अलग तरह से प्रतिक्रिया करता है। इसलिए, किसी भी दवा चाहे वह हर्बल ही क्यों न हो को शुरू करने से पहले विशेषज्ञ की सलाह लेना जरूरी है। थायराइड जैसी बीमारियां जीवनशैली, खान–पान और तनाव से जुड़ी होती हैं, इसलिए संतुलित आहार, नियमित व्यायाम, पर्याप्त नींद और मानसिक शांति बनाए रखना उतना ही जरूरी है जितना दवा लेना।



दिल के लिए खतरे की घंटी हैं ये 7 लक्षणः किसी भी वक्त आ सकता है हार्ट अटैक...

दिल हमारी जिंदगी की धड़कन है, लेकिन जब यही कमजोर पड़ने लगता है तो शरीर पहले से संकेत देने लगता है। इन्हें नजरअंदाज करना खतरनाक हो सकता है, क्योंकि हार्ट अटैक अचानक नहीं आता यह पहले चेतावनी देता है। अगर आप इन 7 लक्षणों को महसूस कर रहे हैं, तो सावधान हो जाएं, क्योंकि ये दिल के लिए खतरे की घंटी हैं।बल्कि इसके संकेत कई महीनों पहले मिलने लगते हैं। तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें क्योंकि ये दिल के कमजोर होने का इशारा हैं।

पेट फूला हुआ महसूस होना

अगर आपको थोड़ा भी खाने पर पेट फूला हुआ या ऊपरी हिस्से में भारीपन महसूस होता है, तो इसे सामान्य गैस या अपच समझकर टालना गलत हो सकता है। यह इस बात का संकेत हो सकता है कि आपका दिल शरीर में रक्त पंप करने में कमजोर हो रहा है, जिससे पाचन तंत्र पर असर पड़ता है। लगातार पेट भरा–भरा लगना या बिना कारण पेट का आकार बढ़ना दिल की समस्या का शुरुआती संकेत हो सकता है।

झुकने या उठने पर चक्कर आना

अगर आप झुककर कुछ उठाते हैं या अचानक खड़े होते ही चक्कर आने लगता है, तो यह सिर्फ कमजोरी नहीं, बल्कि ब्लड फ्लो की गड़बड़ी का परिणाम भी हो सकता है। जब दिल ठीक से खून पंप नहीं करता, तो दिमाग तक पर्याप्त ऑक्सीजन नहीं पहुंचती और सिर घूमने लगता है। यह संकेत है कि आपके हृदय को तुरंत जांच की जरूरत है।

पैरों और एड़ियों में सूजन

अगर सुबह उठते ही आपके पैर या एड़ियां सूजी हुई मिलें और दिनभर सूजन बढ़ती जाए, तो यह शरीर में फ्लूइड रिटेंशन (पानी रुकना) का लक्षण है। जब दिल सही तरीके से खून पंप नहीं कर पाता, तो अतिरिक्त तरल पदार्थ शरीर के निचले हिस्सों में जमा होने लगता है। इसे अक्सर लोग 'थकान की सूजन' समझकर इग्नोर कर देते हैं, जबकि यह हार्ट फेल्योर का संकेत हो सकता है।

थकान या एनर्जी की कमी

अगर बिना ज्यादा मेहनत किए आप हमेशा थकान या कमजोरी महसूस करते हैं, तो यह सामान्य नहीं है। दिल की कमजोरी के कारण शरीर को पर्याप्त ऑक्सीजन नहीं मिल पाती, जिससे थोड़े–से काम में भी सांस फूलने लगती है। यह स्थिति महीनों पहले से शुरू हो सकती है और धीरे–धीरे बढ़ती जाती है। इसे "कमजोरी" या "काम का बोझ" मानकर टालना नुकसानदायक हो सकता है।

रोज के काम करना मुश्किल लगना

पहले जो काम आप आसानी से कर लेते थे जैसे सीढ़ियां चढ़ना, थोड़ा पैदल चलना या सामान उठाना अब मुश्किल लगने लगे, तो यह आपके हृदय के कमजोर होने का संकेत है। दिल जब पर्याप्त ताकत से पंप नहीं कर पाता, तो शरीर जल्दी थक जाता है और सांस लेने में कठिनाई महसूस होती है। इस स्थिति को नजरअंदाज करना आपकी जीवनशैली और दिल दोनों के लिए खतरनाक साबित हो सकता है।

डॉक्टर की सलाह इन लक्षणों में से कोई भी दिखे तो कार्डियोलॉजिस्ट से जांच करवाएं क्योंकि समय रहते इलाज शुरू कर देना ही असली बचाव है।

डिस्क्लेमरः यह जानकारी सोशल मीडिया पर साझा स्वास्थ्य सलाह पर आधारित है। किसी भी नुस्खे या दावे को अपनाने से पहले अपने डॉक्टर से परामर्श लें।

फटे होठों से पाएं छुटकारा! घी-एलोवेरा से घर पर बनाएं नेचुरल लिप बाम, होंगे लिप्स मुलायम

ठंड के मौसम में सर्द हवाओं के कारण होठों का फटना लाजमी है। विंटर सीजन में होंठ फटना एक आम समस्या है। यह समस्या इतनी बढ़ जाती है कि लोगों के होठों में गहरी दरारे तक आ जाती है और कभी–कभी तो खून निकलने लगता है। जिससे यह समस्या और भी दर्दनाक बन जाती है। फटे हुए होठों की समस्या लोग इग्नोर कर देते हैं, जिससे बाद में यह दिक्कत और बढ़ जाती है। अगर आप भी ड्राई लिप्स और होंठ फटने की समस्या से परेशान हैं, तो आप घर पर ही होममेड लिप बाम बना सकते हैं। इस मौसम में पानी कम पीने के वजह से डिहाइड्रेशन की समस्या बढ़ जाती है। नमी के कारण भी त्वचा और होंठ दोनों ही सूखने लगते हैं। इसलिए इस मौसम में अपने होंठों की देखभाल जरुर करें और घर बनाएं होममेड लिप बाम, जिससे आपके लिप्स मुलायम और खिले–खिले नजर आएंगे।

होममेड लिप बाम

सामग्री : – 1 चम्मच घी, 1 विटामिन–ई कैप्सूल, 1 चम्मच एलोवेरा जेल

विधिः सबसे पहले आप एक कटोरी में घी, विटामिन ई और एलोवेरा जेल लें और इसे अच्छे से मिक्स कर लें। जब यह तीनों अच्छे से मिक्स हो जाएं, तब कांच की शीशी में इसको भर लें। दिन में इस लिप बाम को कम से कम 3 या 4 बार जरुर लगाएं। क्या पता आपको इसका स्मेल और टेस्ट ठीक न लगे लेकिन इसका इस्तेमाल आप नियमित रुप से होंठों पर जरुर करें।

होममेड लिप बाम के फायदे

– इस होममेड लिप बाम को लगाने आपके होंठ और त्वचा दोनों ही हाइड्रेटेड बनें रहेंगे। क्योंकि एलोवेरा जेल में विटामिन–सी होता है।

– इसमें देसी घी मिला हुआ है, जो त्वचा को भरपूर मॉइश्चर प्रदान करता है और होंठ फटते नहीं है।



संक्षिप्त



भारत पेट्रोलियम ने तथ्यों के साथ पहले कर्नाटक के ई20 दावे को किया खारिज, फिर तुरंत डिलीट किया ट्वीट

भारत पेट्रोलियम अभी एक्स पर 'मिथ वर्सेस फैक्ट' (भ्रम बनाम तथ्य) नाम का एक अभियान चला रहा है, जिसका मकसद कर्नाटक सरकार के ई20 से जुड़े गंभीर दावों का जवाब देना है। हालांकि, कंपनी के एक ट्वीट को डिलीट किए जाने के बाद काफी आलोचना हो रही है और चिंताएं भी जताई जा रही हैं। रविवार को किए गए इस ट्वीट में दावा किया गया था कि मैसूर के एक पेट्रोल पंप पर पेट्रोल में इथेनॉल के मिश्रण की जांच करने पर पता चला कि इसमें तय सीमा के अनुसार 20 प्रतिशत इथेनॉल मौजूद है। लेकिन, कई लोगों ने तुरंत ध्यान दिलाया कि असल में इथेनॉल की मात्रा तय सीमा को पार कर गई थी और 33 प्रतिशत तक पहुंच गई थी। हालांकि भारत पेट्रोलियम ने तुरंत उस ट्वीट को डिलीट कर दिया, लेकिन उसके स्क्रीनशॉट वायरल हो गए। लोग अब कंपनी के दोहरे रवैये पर सवाल उठा रहे हैं। कई अन्य उपयोगकर्ताओं ने डिलीट किए गए ट्वीट का स्क्रीनशॉट साझा किया, और कुछ ने सरकारी कंपनी भारत पेट्रोलियम से इस बारे में स्पष्टीकरण की मांग की। एक गंभीर आरोप लगाते हुए, कांग्रेस के नेतृत्व वाली कर्नाटक सरकार ने पिछले हफ्ते कहा कि तेल विपणन कंपनियों द्वारा बेचे जाने वाले पेट्रोल में, तय 20 प्रतिशत की सीमा से कहीं अधिक इथेनॉल (म्20) मिला हुआ है। राज्य सरकार ने बताया कि दक्षिणी राज्य में प्ब्स्, शेल (ैमसस) और भ्ब्स् जैसी प्रमुख तेल कंपनियों से लिए गए 63 नमूनों में म्20 की मात्रा तय मानक से अधिक पाई गई। इससे यह चिंता पैदा हो गई है कि इस तरह की अत्यधिक मिलावट से वाहन मालिकों को भारी आर्थिक नुकसान हो सकता है। इस दावे के कारण ठश्रच और कांग्रेस के बीच एक नया राजनीतिक विवाद खड़ा हो गया है। केरल, जहां कांग्रेस की सरकार है, ने पेट्रोल पंपों पर रैंडम जांच शुरू कर दी है। फिलहाल, यह जांच चार जिलों – तिरुवनंतपुरम, एर्नाकुलम, कोझिकोड और कन्नूर – में चल रही है। मंत्री अनूप जैकब ने कहा कि अगर पहले चरण में कुछ गड़बड़ी सामने आती है, तो इस जांच का दायरा और भी क्षेत्रों तक बढ़ाया जाएगा।

विदेशी पूंजी प्रवाह और कच्चे तेल में नरमी से US Dollar के मुकाबले मजबूत हुआ रुपया

मुंबई। रुपया मंगलवार को अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 21 पैसे मजबूत होकर 93.77 पर बंद हुआ। कच्चे तेल की कीमतों में नरमी, विदेशी पूंजी के बेहतर प्रवाह और पश्चिम एशिया में तनाव कम होने की उम्मीदों से निवेशकों की धारणा को समर्थन मिला। विदेशी मुद्रा कारोबारियों के अनुसार, विदेशी निवेश का लगातार प्रवाह, कच्चे तेल की कीमतों में स्थिरता और डॉलर में मामूली कमजोरी से रुपये को समर्थन मिला। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया करीब 93.85 प्रति डॉलर पर खुला। कारोबार के दौरान यह अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 93.69 के उच्च स्तर तक गया तथा 94.11 के निचले स्तर तक आया। अंत में रुपया 93.77 प्रति डॉलर पर बंद हुआ, जो पिछले बंद भाव के मुकाबले 21 पैसे की बढ़त है। रुपया शुक्रवार को 43 पैसे चढ़कर 93.98 प्रति डॉलर पर बंद हुआ था। एचडीएफसी सिक्योरिटीज के वरिष्ठ शोध विश्लेषक दिलीप परमार ने कहा, ''सरकारी बैंकों की ओर से बाजार अवकाश से पहले डॉलर की खरीदारी के कारण रुपये की पांच दिन की लगातार बढ़त का सिलसिला टूट गया। दिन के कारोबार में आई गिरावट से पहले सुबह डॉलर सूचकांक में नरमी, विदेशी संस्थागत निवेशकों का मजबूत प्रवाह और कच्चे तेल की कमजोर कीमतों से रुपये को समर्थन मिला था।'' उन्होंने कहा कि निकट अवधि में डॉलर के मुकाबले रुपये के हाजिर भाव के लिए 93.50 का स्तर मजबूत समर्थन और 94.30 का स्तर प्रतिरोध का काम करेगा। इस बीच, दुनिया की छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले डॉलर की स्थिति को दर्शाने वाला डॉलर सूचकांक 0.45 प्रतिशत गिरावट के साथ 101.83 पर रहा। अंतरराष्ट्रीय तेल मानक ब्रेंट कच्चे तेल का भाव वायदा कारोबार में 0.80 प्रतिशत फिसलकर 97.53 डॉलर प्रति बैरल रहा। शेयर बाजार के आंकड़ों के अनुसार, विदेशी संस्थागत निवेशक (एफआईआई) बाजार में शुद्ध लिवाल रहे। उन्होंने सोमवार को शुद्ध रूप से 7,212.22 करोड़ रुपये मूल्य के शेयर खरीदे। इस बीच, भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के शुक्रवार को जारी आंकड़ों के अनुसार, 30 अक्टूबर को समाप्त सप्ताह में देश का विदेशी मुद्रा भंडार 2.69 अरब डॉलर घटकर 717.05 अरब डॉलर रह गया।

टेनेको इंडिया का गैर-वाहन क्षेत्रों में विस्तार का प्लान, अधिग्रहण के नए मौके तलाशेगी कंपनी

नयी दिल्ली। वाहन कलपुर्जे बनाने वाली कंपनी टेनेको क्लीन एयर इंडिया अपने कारोबार का विस्तार वाहन क्षेत्र से आगे करने और उसमें विविधता लाने के लिए अधिग्रहण के अवसर तलाश रही है। कंपनी के एक वरिष्ठ अधिकारी ने यह जानकारी दी। कंपनी रेलवे, वैमानिकी और रक्षा सहित औद्योगिक क्षेत्रों में अवसरों पर विचार कर रही है। इसके साथ ही वह ऐसे वाहन उत्पादों का दायरा भी बढ़ाना चाहती है, जो किसी एक प्रकार के पावरट्रेन पर निर्भर न हों और आंतरिक दहन इंजन (आईसीई), हाइब्रिड तथा इलेक्ट्रिक वाहन, तीनों में इस्तेमाल किए जा सकें। कंपनी के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) अरविंद चंद्रा ने पीटीआई-भाषा से कहा, ''हम संबंधित क्षेत्रों में कारोबार के विस्तार के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों में भी विविधीकरण के अवसर तलाश रहे हैं। अधिग्रहण और विलय (एमएंडए) के कई अवसरों पर हमारी नजर है और हम इसे लेकर काफी उत्साहित हैं। टेनेको वाहन कलपुर्जे बनाने वाली कंपनी है। इसका कारोबार क्लीन एयर, पावरट्रेन समाधान और उन्नत राइड टेक्नोलॉजी से जुड़ा है। इसके उत्पादों में एग्जॉस्ट ऑफ्टर-ट्रीटमेंट सिस्टम, बेयरिंग, स्पार्क प्लग और सस्पेंशन प्रणाली शामिल हैं। चंद्रा ने कहा, ''हमारी आंतरिक रणनीति कारोबार को बढ़ाने की है। हम पावरट्रेन के मामले में किसी एक तकनीक तक सीमित नहीं रहना चाहते।

आकश चोपड़ा ने MI को दी सलाह, ट्रेंट बोल्ट को रिलीज कर हार्दिक पांड्यां का ट्रेड करें



पूर्व क्रिकेटर आकाश चोपड़ा का मानना है कि प्ब्स् 2027 से पहले मुंबई इंडियंस में बदलाव की शुरुआत हार्दिक पांड्या के ट्रेड से हो सकती है। उन्होंने कहा कि हार्दिक के बदले दो खिलाड़ी मिल सकते हैं, वरना उन्हें रिटेन करना होगा। चोपड़ा ने खराब प्रदर्शन और 12.5 करोड़ रुपये सैलरी वाले गेंदबाज ट्रेंट बोल्ट को रिलीज करने का भी समर्थन किया।

भारत के पूर्व क्रिकेटर आकाश चोपड़ा का मानना है कि IPL 2027 सीज़न से पहले मुंबई इंडियंस की टीम में बड़े बदलावों की शुरुआत हार्दिक पांड्या के ट्रेड (अदला-बदली) से हो सकती है। इसके साथ ही, उन्होंने पिछले सीज़न में खराब प्रदर्शन करने वाले तेज़ गेंदबाज़ ट्रेंट बोल्ट को टीम से रिलीज़ करने के फैसले का भी समर्थन किया। श्रपवैजंत के श्गेम प्लानश शो में बात करते हुए, चोपड़ा ने कहा कि मुंबई इंडियंस के पास अनुभवी और आक्रामक खिलाड़ियों से भरी एक संतुलित टीम है। अगर पिछला सीज़न उनकी योजना के मुताबिक रहा होता, तो टीम को कोई बड़ा बदलाव करने की ज़रूरत नहीं पड़ती। हालाँकि, उन्होंने हार्दिक पांड्या के ट्रेड की संभावना को एक अहम कारक बताया, जो खिलाड़ियों को रिटेन (टीम में बनाए रखने) या रिलीज़ करने के टीम के फैसलों पर बड़ा असर डाल सकता है।

चोपड़ा ने कहा, अगर पिछले सीज़न में सब कुछ ठीक रहा होता, तो उनकी टीम को देखकर लगता कि कुछ भी बदलने की क्या ज़रूरत है? उनके पास संतुलन है, अनुभव है और आक्रामक खिलाड़ी भी हैं। तो फिर बदलाव क्यों? हो सकता है कि उन्हें किसी भारतीय स्पिनर या तेज़ गेंदबाज़ की ज़रूरत हो, जिसे वे ढूँढ लेंगे। बस इतना ही करने की ज़रूरत थी। लेकिन अभी सबसे ज़्यादा चर्चा हार्दिक पांड्या के ट्रेड की हो रही है। खिलाड़ियों को रिटेन या रिलीज़ करने के मामले में, मुंबई इंडियंस के लिए यहीं से शुरुआत हो सकती है, क्योंकि हार्दिक जैसे खिलाड़ी आसानी से नहीं मिलते। लेकिन क्या हो अगर उनकी जगह आपको दो खिलाड़ी मिल जाएँ?

चोपड़ा ने विदेशी तेज़ गेंदबाज़ ट्रेंट बोल्ट को रिलीज़ करने का भी समर्थन किया। उन्होंने बोल्ट के प्रदर्शन और उनकी सैलरी का हवाला देते हुए कहा कि उन पर खर्च किए गए 12.5 करोड़ रुपये का इस्तेमाल कई अन्य खिलाड़ियों को टीम में शामिल करने के लिए किया जा सकता है। उन्होंने कहा, पाँच मैच, दो विकेट, और प्रति ओवर 11.5 रन। इससे साफ़ है कि ट्रेंट बोल्ट को रिलीज़ कर देना चाहिए। 12.5 करोड़ रुपये एक बड़ी रकम है, और इसके बदले में आप कई खिलाड़ी ले सकते हैं। ऐसा करने पर आपको शायद अन्य खिलाड़ियों को रिलीज़ करने की ज़रूरत भी न पड़े।

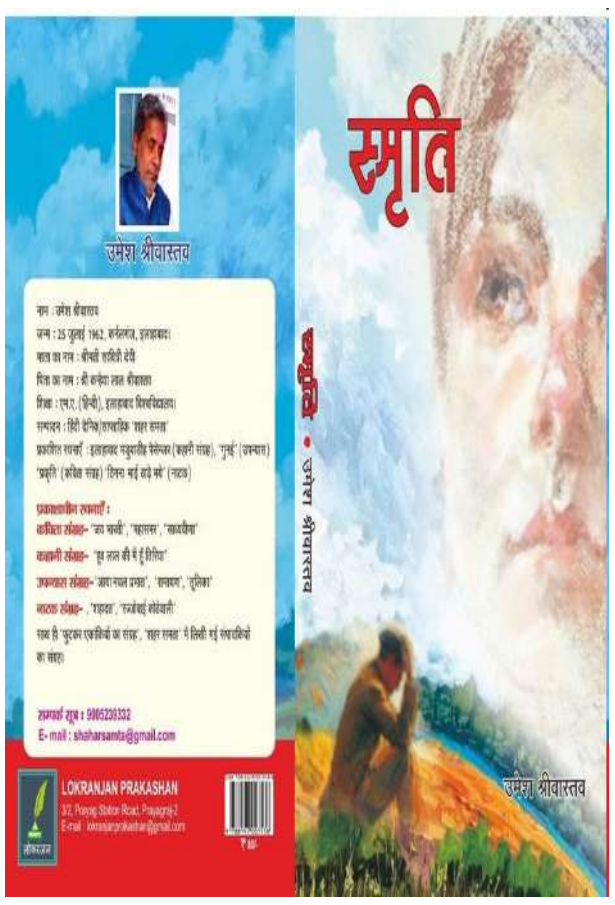
इसे भी पढ़ेंरू ज्मंउ प्दकपं के ओपनर अभिषेक शर्मा ऑकलैंड T20I में 49 रन बनाकर तोड़ेंगे बड़ा रिकॉर्ड

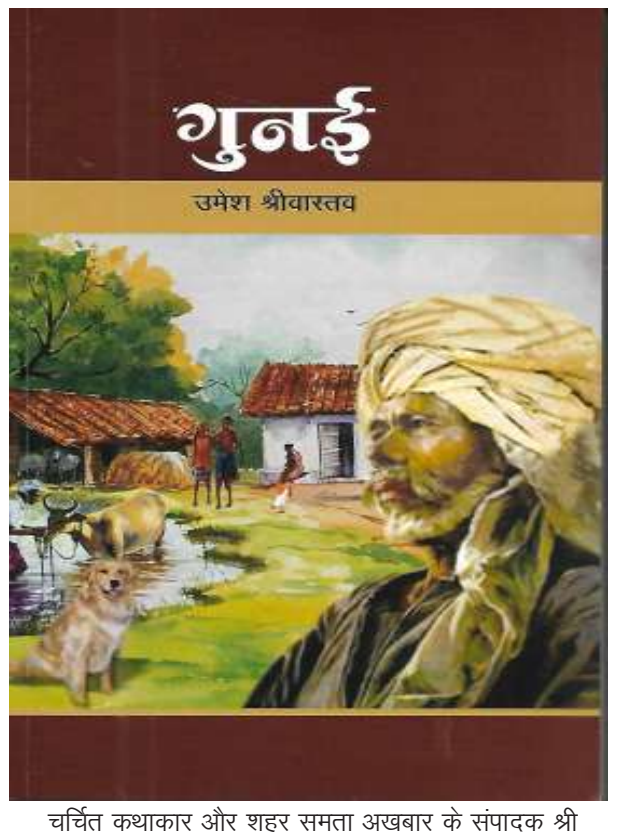
ट्रेड के जरिए पांड्या के जाने की संभावना पर, चोपड़ा ने स्पष्ट किया कि यह मामला सिर्फ खिलाड़ी को रिटेन करने या रिलीज करने तक सीमित नहीं होगा। उन्होंने कहा कि अगर ड्प् को बदले में कोई उपयुक्त खिलाड़ी नहीं मिल पाता है, तो उन्हें इस ऑलराउंडर को रिटेन करना ही पड़ेगा। उन्होंने आगे कहा, ष्हार्दिक पांड्या का मामला एक ट्रेड का होगा; यह सिर्फ रिलीज या रिटेन करने का सवाल नहीं है। इसलिए, अगर उनके बदले में आपको कोई खिलाड़ी नहीं मिल पाता है, तो आपको हार्दिक पांड्या को रिटेन करना ही होगा। इसमें कोई शक नहीं है।

हैमिल्टन में बारिश के कारण तीसरा ODI रद्द, 5 मैचों की सीरीज में टीम इंडिया 2-0 से आगे

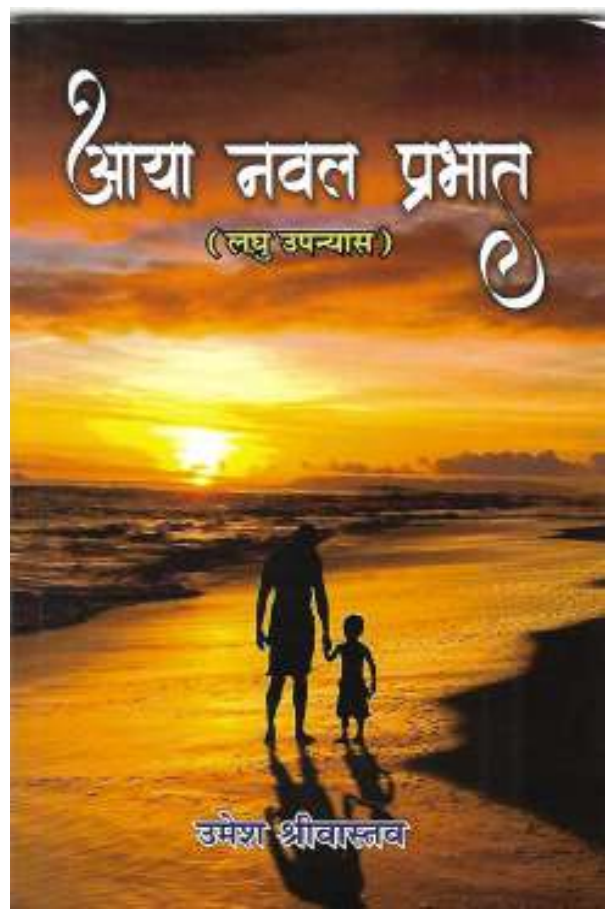
हैमिल्टन के सेडन पार्क में भारत और न्यूजीलैंड के बीच तीसरा वनडे मैच लगातार बारिश के कारण रद्द कर दिया गया। इस नतीजे के बाद पांच मैचों की सीरीज में भारतीय टीम 2-0 से आगे है। अब टेस्ट सीरीज की तैयारी के लिए शुभमन गिल और केएल राहुल की रवानगी के बाद उप-कप्तान श्रेयस अय्यर बाकी दो मैचों में कप्तानी करेंगे।

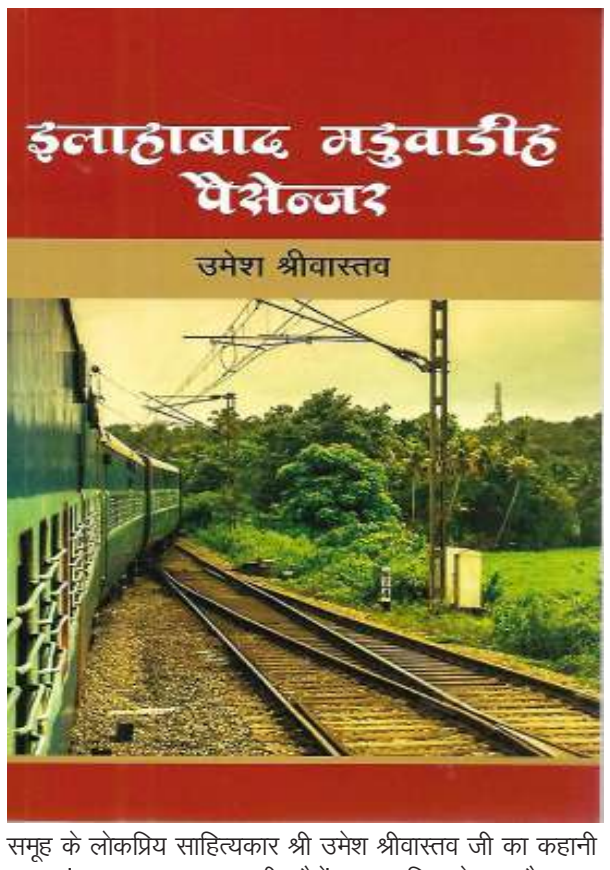
हैमिल्टन के सेडन पार्क में भारत और न्यूज़ीलैंड के बीच तीसरा वनडे मैच बारिश के कारण रद्द कर दिया गया है। पांच मैचों की इस सीरीज़ में भारत अभी 2-0 से आगे है, और अब ज़्यादा से ज़्यादा यही हो सकता है कि सीरीज़ ड्रॉ हो जाए। कप्तान शुभमन गिल और केएल राहुल टेस्ट सीरीज़ की तैयारियों के लिए रवाना हो रहे हैं, और अब आखिरी दो वनडे मैचों में उप-कप्तान श्रेयस अय्यर टीम की कमान संभालेंगे। इससे पहले, शुभमन गिल ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाज़ी करने का फ़ैसला किया था। अब तक खेले गए तीनों मैच बारिश से प्रभावित रहे हैं। पहले वनडे में, अर्शदीप सिंह ने शानदार गेंदबाजी करते हुए 4 विकेट लिए। उनके साथ गुरनूर बराड़ (9.2 ओवर में 3/44) ने 3 विकेट और अंशुल कंबोज (10 ओवर में 2/22) ने 2 विकेट चटकाए, जिससे न्यूजीलैंड की पूरी टीम 185 रन पर सिमट गई। विराट कोहली (51 गेंदों में 74 रन, 13 चौके और 1 छक्के के साथ) ने बेहतरीन बल्लेबाजी की और भारत ने 32 ओवर में मिले 143 रनों के संशोधित लक्ष्य को आसानी से हासिल कर लिया। भारत की पारी के दौरान बारिश की वजह से खेल में कई बार रुकावट आई। दूसरे वनडे में, भारत ने पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। गुरनूर बराड़ (4/30) ने शानदार प्रदर्शन करते हुए न्यूजीलैंड की टीम को 41 ओवर में सिर्फ 134 रन पर समेट दिया। 135 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए भारत की शुरुआत खराब रही और टीम 47 रन पर 4 विकेट गंवा बैठी। शुभमन गिल (0), रोहित शर्मा (23) और विराट कोहली (7) जैसे बड़े खिलाड़ी जल्दी आउट हो गए। श्रेयस अय्यर (46 गेंदों में 30 रन, 4 चौके और 1 छक्के के साथ) और केएल राहुल (38 गेंदों में नाबाद 26 रन, 2 चौके और 2 छक्कों के साथ) ने पारी को संभाला, लेकिन जैकब डफी और काइल जैमीसन (दोनों ने 3/35 विकेट लिए) ने भारत को 113/7 की मुश्किल स्थिति में धकेल दिया।



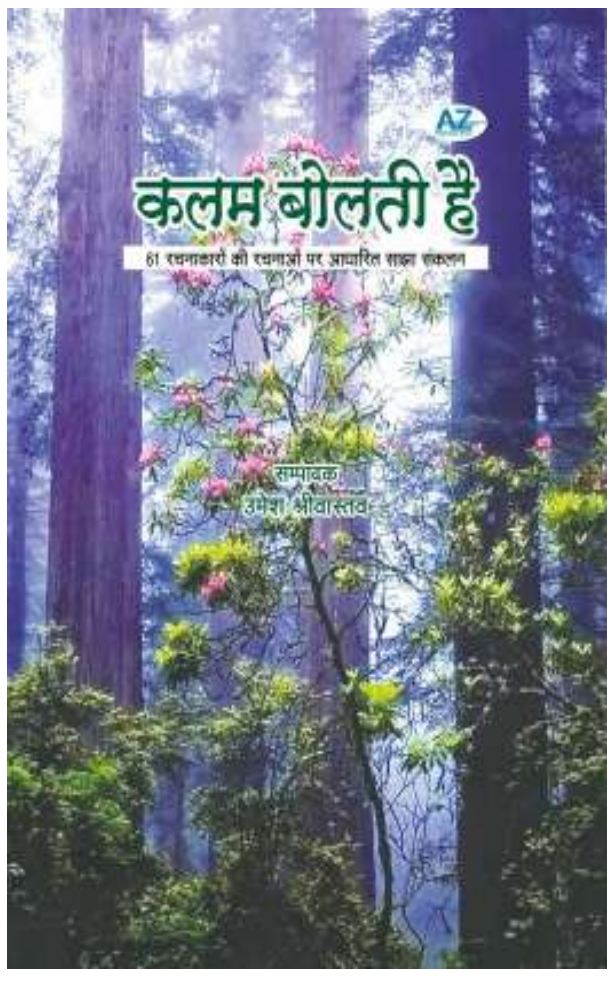


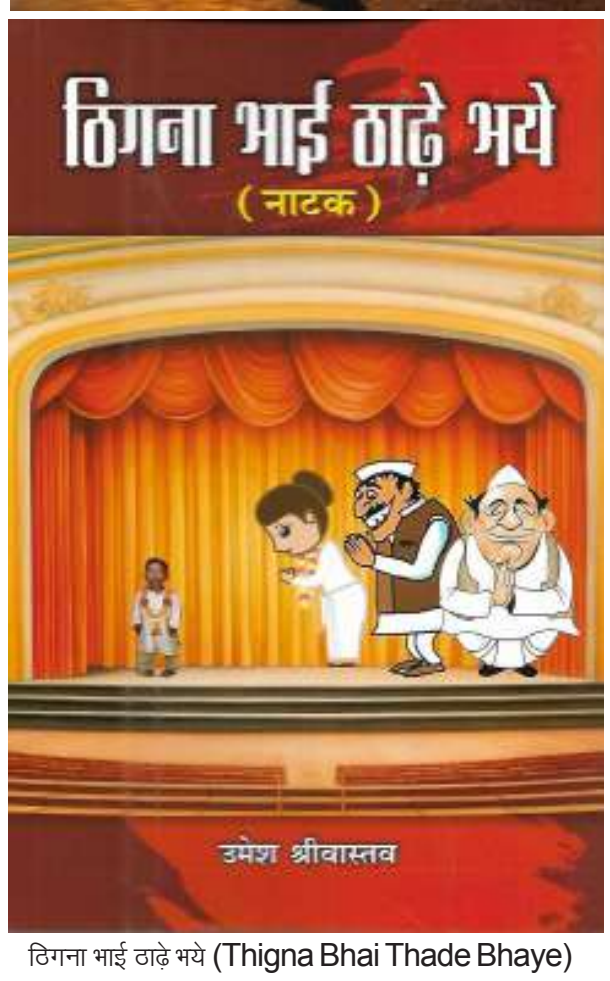
चर्चित कथाकार और शहर समता अखबार के संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव जी का ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखा बहु प्रतीक्षित





समूह के लोकप्रिय साहित्यकार श्री उमेश श्रीवास्तव जी का कहानी संग्रह इलाहाबाद मडुवाडीह पैसेंजर प्रकाशित हो गया है। उमेश श्रीवास्तव जी को बहुत बधाई एवम शुभकामना।





ठिगना भाई ठाढ़े भये (Thigna Bhai Thade Bhaye)

संक्षिप्त

चीन का नया एंटी-क्रॉस-बॉर्डर करप्शन लॉ मंजूर, विदेश में रह रहे विरोधियों पर कसेगा शिकंजा

चीन के नए श्एंटी–क्रॉस–बॉर्डर करप्शन लॉश (सीमा–पार भ्रष्टाचार विरोधी कानून) को लेकर चिंताएं जताई गई हैं। आशंका है कि बीजिंग भ्रष्टाचार विरोधी उपायों का इस्तेमाल असंतुष्टों और राजनीतिक विरोधियों के खिलाफ अपनी विदेशी गतिविधियों को वैध बनाने के लिए कर सकता है, जिससे चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (ब्ब्) के आलोचकों में डर का माहौल पैदा हो सकता है। श्द एपोक टाइम्सश की रिपोर्ट के मुताबिक, चीन की नेशनल पीपुल्स कांग्रेस (छच्ब्) की स्थायी समिति ने 6 नवंबर को इस कानून को मंजूरी दी। यह फैसला ब्ब् के श्पांचवें प्लेनमश (पूर्ण अधिवेशन) के बाद लिया गया, जिसमें पार्टी ने ष्पार्टी के पूर्ण और कठोर शासनष् को आगे बढ़ाने पर जोर दिया था जो कि पार्टी के भीतर चल रहे एक व्यापक अनुशासनात्मक अभियान का हिस्सा है। चीनी प्रशासन के अनुसार, यह कानून सरकारी एजेंसियों को उन चीनी नागरिकों का पता लगाने और उन्हें वापस लाने के लिए अधिकृत करता है, जिन पर भ्रष्टाचार का संदेह है और जो विदेश भाग गए हैं। साथ ही, यह कानून अंतरराष्ट्रीय सीमाओं के पार मौजूद उन संपत्तियों को जब्त करने की भी अनुमति देता है, जिनके बारे में आरोप है कि उन्हें अवैध तरीके से हासिल किया गया था। हालाँकि, श्द एपोक टाइम्सश द्वारा उद्धृत विश्लेषकों ने चेतावनी दी है कि यह कानून बीजिंग को चीन की सीमाओं के बाहर अपनी पहुँच बढ़ाने और विदेशों में रह रहे असंतुष्टों पर दबाव तेज करने के लिए एक कानूनी आधार दे सकता है। अमेरिका स्थित वरिष्ठ विश्लेषक वांग हे ने कहा कि इस कानून का उद्देश्य चीनी कम्युनिस्ट पार्टी को पश्चिमी सरकारों से मदद और सहयोग मांगने के लिए एक कानूनी आधार प्रदान करना है, ताकि वह यह दिखा सके कि उसका शासन श्कानून के शासनश (तनसम वि सूं) पर आधारित है। उन्होंने बताया कि पश्चिमी लोकतांत्रिक देशों के साथ बीजिंग की आमतौर पर कोई प्रत्यर्पण संधि (म•जतंकपजपवद जतमंजल) नहीं है। वे अक्सर संदिग्धों को पकड़ने में मदद के लिए बीजिंग के अनुरोधों को ठुकरा देते हैं, क्योंकि उन्हें चीन में न्यायिक पारदर्शिता की कमी, असंतुष्टों और धार्मिक लोगों के राजनीतिक उत्पीड़न, मौत की सजा, यातना और मानवाधिकारों के अन्य उल्लंघनों को लेकर चिंताएं हैं। ताइवान में निर्वासित जीवन जी रहे प्रमुख चीनी असंतुष्ट और 1989 के छात्र लोकतंत्र आंदोलन के नेता वांग डैन ने भी अपने यूट्यूब टॉक शो के दौरान इस कानून को लेकर चिंता जताई। वांग डैन ने इस कानून को विवादास्पद विदेशी अभियानों पर कानूनी आवरण चढ़ाने वाला करार देते हुए चेतावनी दी कि सीमा पार भ्रष्टाचार के कथित मामलों को इसके दायरे में लाने से चीनी कानून प्रवर्तन एजेंसियों को अपने अधिकार क्षेत्र की व्याख्या का विस्तार करने का मौका मिल सकता है। उन्होंने कहा कि चीनी अधिकारी विदेशों में रहने वाले असंतुष्टों और चीन में उनके रिश्तेदारों या सहयोगियों के बीच होने वाले वित्तीय लेन–देन की जांच कर सकते हैं, और ऐसे लेन–देन से जुड़े लोगों को भ्रष्टाचार की जांच में श्संदेहास्पद व्यक्ति के रूप में चिह्नित कर सकते हैं। उन्होंने चेतावनी दी कि इससे आर्थिक जांच, दबाव डालने का एक हथियार बन सकती है और असंतुष्टों के बीच डर का माहौल पैदा हो सकता है।

क्या रूस यूक्रेन में होगी सुलह? अबू धाबी में अमेरिका की मध्यस्थता से शांति वार्ता शुरू

अमेरिकी अधिकारियों ने कहा है कि वे रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध को पूरी तरह खत्म करने की कोशिश करेंगे। इसकी शुरुआत मंगलवार को अबू धाबी में होने वाली त्रिपक्षीय बातचीत से होगी, जो फरवरी के बाद से दोनों देशों के बीच पहली ठोस बातचीत है। यह बातचीत ऐसे समय में हो रही है जब हाल ही में अमेरिका ने इज़राइल के साथ मिलकर ईरान पर हमले किए हैं। साथ ही, यह अमेरिका में हुए कड़े मध्यावधि चुनावों के बाद हो रही है, जिन्होंने डोनाल्ड ट्रम्प को उनके अपने देश में कमजोर कर दिया है। प्रशासन के अधिकारियों के अनुसार,



ट्रम्प प्रशासन के प्रस्ताव में रूस और यूरोप के बीच एक नया दीर्घकालिक सुरक्षा ढांचा तैयार करना शामिल है। यूरोपीय अधिकारियों को चिंता है कि रूस अपनी उन सख्त मांगों पर अड़ा रह सकता है, जिनमें नाटो से पूर्वी यूरोप में अपनी सैन्य मौजूदगी कम करने को कहा गया है। अगर ऐसा होता है, तो पश्चिमी देशों के साथ ऐतिहासिक तनाव के इस दौर में, सहयोगी देश मॉस्को के प्रभाव के सामने असुरक्षित हो सकते हैं। सत्ता में अपने पहले दशक से ही व्लादिमीर पुतिन ने नाटो के पूर्व की ओर विस्तार को लेकर शिकायत की है और नाटो तथा रूस के बीच शक्ति संतुलन पर फिर से बातचीत करने की कोशिश की है।

नेतन्याहू की विदाई से क्या फंस गया भारत! आइजनकोट के पीएम बनते ही टूटेंगे संबंध?

इज़राइल में सत्ता बदलने वाली है। प्रधानमंत्री बदलने वाले हैं। बेंजामिन नेतन्याहू जो बरसों से इज़राइल की राजनीति के सबसे ताकतवर चेहरों में रहे हैं, अब अपनी कुर्सी बचाने की लड़ाई लड़ रहे हैं। और दूसरी तरफ गादी आइजनकोट को इज़राइल की नई सरकार बनाने की जिम्मेदारी मिल चुकी है। लेकिन इस राजनीतिक बदलाव के बीच भारत के लिए एक बड़ा सवाल खड़ा हो गया है। क्या नेतन्याहू के जाने के बाद भारत और इज़राइल की दोस्ती भी बदल जाएगी? क्या नई सरकार भारत के साथ रक्षा सौदों, सैन्य तकनीक और रणनीतिक सहयोग को उसी रफ्तार से आगे बढ़ाएगी या फिर ईरान, फिलिस्तीन और गाजा के मुद्दे पर आइजनकोट की सोच भारत के लिए नई कूटनीतिक चुनौती खड़ी कर सकती है। जिस गादी आइजनकोट को आज इज़राइल का अगला प्रधानमंत्री बनाने की कोशिश हो रही है, उन्हें न्योता मिला है। उनसे भारतीय नौसेना इंडियन नेवी के तत्कालीन प्रमुख एडमिरल सुनील लांबा ने साल 2017 में मुलाकात की थी। उस वक्त आइजनकोट इज़राइली सेना के सबसे बड़े सैन्य अधिकारी थे। आइजनकोट कोई नए नवेले राजनीतिक नेता नहीं हैं। वो इज़राइल की सेना यानी इज़राइल डिफेंस फोर्सेस प्ब्थ् के पूर्व प्रमुख रह चुके हैं। उन्होंने करीब चार दशक तक सेना में सेवा दी। साल 2015 से 2019 तक वो इज़राइली सेना के चीफ ऑफ जनरल स्टाफ रहे। यानी इज़राइल के सैन्य रणनीतिक सुरक्षा व्यवस्था और क्षेत्रीय खतरों का वो बहुत करीब से समझते हैं। और भारत के साथ उनका खास कनेक्शन भी इसी भूमिका में जुड़ा हुआ है। जून 2017 की बात है। भारतीय नौसेना के तत्कालीन प्रमुख एडमिरल सुनील लांबा इजराइल के दौरे पर गए थे। इस दौरे के दौरान उन्होंने इजराइली सेना प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल गादी आइजन कोट से मुलाकात की थी। दोनों के बीच भारत और इजराइल के रक्षा



सहयोग, क्षेत्रीय सुरक्षा और सैन्य साझेदारी को आगे बढ़ाने पर चर्चा हुई, सहमति बनी। एडमिरल लांबा ने इजराइल के नौसेना प्रमुख से भी मुलाकात की थी और हाइफा नौसैनिक अड्डे का दौरा किया था। यानी आज जिस आइजन कोट को इजराइल की सत्ता की कमान संभालने का मौका मिला है, वो भारत के सैन्य नेतृत्व के साथ पहले भी रक्षा सहयोग पर बातचीत कर चुके हैं। लेकिन ये साफ कर देना जरूरी है कि ये भारत के साथ उनका रक्षा और सैन्य संपर्क है। इसे किसी निजी रिश्ते या भारत के प्रति उनकी घोषित राजनीतिक प्रतिबद्धता के तौर पर फिलहाल नहीं देखना चाहिए। अब समझिए भारत और इजराइल की दोस्ती का इतिहास क्या रहा है। भारत ने 17 सितंबर 1950 को इजराइल को मान्यता दे दी थी। लेकिन दोनों देशों के बीच पूर्ण राजनयिक संबंध स्थापित होने में करीब चार दशक लग गए। 29 जनवरी 1992 को भारत और इजराइल के पूर्ण राजनयिक संबंध स्थापित हुए। उस समय भारत की विदेश नीति में फिलिस्तीन का मुद्दा बहुत अहम था। भारत अरब देशों के साथ अपने संबंधों को भी ध्यान में रखता था। इसीलिए इजराइल के साथ औपचारिक रिश्ते बनाने में काफी समय लग गया। लेकिन 1992 के बाद तस्वीर तेजी से बदली। रक्षा, कृषि, विज्ञान, तकनीक और व्यापार के क्षेत्र में दोनों देशों का सहयोग बढ़ने लगा और फिर आया 1999 का कारगिल युद्ध। जब पाकिस्तान ने कारगिल में घुसपैठ की तब भारत के सैन्य उपकरणों और निगरानी तकनीक की जरूरत थी। उस मुश्किल समय में इजराइल ने भारत को सैन्य साजो सामान और तकनीकी मदद पहुंचाई। सरचा ड्रोन, निगरानी प्रणाली और लेजर गाइडेड बम जैसे इक्विपमेंट्स ने भारत की सैन्य क्षमता को मजबूत करने में मदद की। कारगिल युद्ध के बाद भारत ने इजराइल को एक भरोसेमंद रक्षा साझेदार के रूप में देखना शुरू किया। इसके बाद दोनों देशों के बीच ड्रोन, रडार, मिसाइल, एयर डिफेंस सिस्टम और निगरानी तकनीक के क्षेत्र में सहयोग लगातार बढ़ता चला गया। भारतीय नौसेना के लिए बराक एयर डिफेंस सिस्टम भी है। इसी सहयोग का एक अहम उदाहरण है ये। यानी भारत–इजराइल संबंध किसी एक प्रधानमंत्री की दोस्ती पर नहीं टिके हैं। किसी सरकार पर नहीं टिके हैं। इनकी बुनियाद कई दशकों के रक्षा सहयोग, तकनीकी साझेदारी और साझा रणनीतिक हितों पर खड़ी है। बुनियाद बेहद मजबूत है। 2017 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की इजराइल यात्रा ने रिश्तों को नया आयाम दिया। कैसे? ये किसी भारतीय प्रधानमंत्री की पहली इजराइल यात्रा थी। पहली इजराइल यात्रा। इस यात्रा के दौरान दोनों देशों ने अपने रिश्तों को रणनीतिक साझेदारी के स्तर पर आगे बढ़ाया। मोदी और नेतन्याहू तब नेतन्याहू ही थे प्रधानमंत्री। मोदी और नेतन्याहू की केमिस्ट्री ने इस रिश्ते को राजनीतिक स्तर पर भी काफी मजबूती दी। सैन्य स्तर पर पहले से ही मजबूती थी लेकिन ये भी याद रखना चाहिए कि भारत–इजराइल संबंध सिर्फ मोदी और नेतन्याहू की व्यक्तिगत दोस्ती का नाम नहीं है।

ईरान पर फिर हमले चाहते हैं नेतन्याहू, हर रोज ट्रंप को मिला रहे थे फोन

ईरान के साथ चल रहे युद्ध को खत्म करने के विकल्पों पर विचार कर रहे अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के साथ, इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू लगातार संपर्क में हैं। बताया जा रहा है कि नेतन्याहू, ट्रंप से तेहरान पर फिर से हमले शुरू करने का आग्रह कर रहे हैं। श्फाइनेंशियल टाइम्सश की एक रिपोर्ट में भी इस बात का जिक्र है कि नेतन्याहू, ट्रंप पर ईरान के खिलाफ हमले फिर से शुरू करने का दबाव बना रहे हैं। इन चर्चाओं की जानकारी रखने वाले एक व्यक्ति ने श्फाइनेंशियल टाइम्सश को बताया, ष्नेतन्याहू उन्हें हर दिन फोन करते हैं ख्और युद्ध फिर से शुरू करने के लिए कहते हैं,। वहीं, जो लोग व्हाइट हाउस के अंदर और बाहर युद्ध नहीं चाहते, वे इसे रोकने की कोशिश कर रहे हैं।ष रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि यह राजनयिक दबाव ऐसे समय में आ रहा है, जब अरब क्षेत्र के नेता अमेरिकी राष्ट्रपति से कूटनीति का रास्ता अपनाने और युद्ध खत्म करने की अपील कर रहे हैं। ट्रंप के पास ये फोन ऐसे समय में आ रहे हैं, जब अमेरिकी सेना लगातार ईरान के इलाकों को निशाना बनाते हुए छोटे स्तर के



सैन्य अभियान चला रही है। गौरतलब है कि 3 नवंबर और 6 नवंबर को अमेरिकी मिसाइलों ने ईरान के केशम द्वीप को निशाना बनाया था। हालांकि अमेरिकी नेता ने सार्वजनिक रूप से बोलते समय 6 नवंबर को केशम द्वीप पर हुए हमलों का सीधे तौर पर जिक्र नहीं किया, लेकिन उन्होंने एक अलग सैन्य अभियान की पुष्टि की। फ्लोरिडा के वेस्ट पाम बीच में पत्रकारों से बात करते हुए ट्रम्प ने कहा कि हम छोटे हमले करते हैं, लेकिन वे असरदार होते हैं। उन्होंने एक तरह का एंटी–एयरक्राफ्ट उपकरण बनाया था, जिसे हमने लगभग 15 मिनट या शायद 5 मिनट में ही नष्ट कर दिया। ईरान पर हमले फिर से शुरू करने के नेतन्याहू के प्रयासों को तब और बल मिला, जब एक राजनीतिक बदलाव के चलते सत्ताधारी पार्टी ने कैपिटल हिल में अपना बहुमत खो दिया; इस बदलाव के पीछे चल रहा युद्ध एक मुख्य कारण था। इसके अलावा, राष्ट्रीय चुनावों के बाद बने राजनीतिक गतिरोध के कारण इजरायली प्रधानमंत्री को अपने देश के भीतर भी राजनीतिक उथल–पुथल का सामना करना पड़ रहा है, क्योंकि लिकुड पार्टी के नेता गठबंधन सरकार बनाने में विफल रहे। राजनयिक रिकॉर्ड से यह भी पता चलता है कि पिछले हफ्ते नेतन्याहू और ट्रम्प ने तेहरान के संबंध में अपनी साझा रणनीतियों पर चर्चा की थी। अमेरिकी प्रशासन के सूत्रों ने एक्सिओस को बताया कि यह बातचीत ष्बहुत स्पष्ट और सीधीष थी। श्एक्सिओसश से बात करने वाले व्हाइट हाउस के अंदरूनी सूत्रों के अनुसार, नेतन्याहू ने ट्रम्प से आग्रह किया था कि वे मध्यावधि चुनावों के नतीजों के तुरंत बाद ईरान पर सैन्य हमले शुरू कर दें, हालांकि अमेरिकी प्रशासन ने राजनयिक बातचीत को जारी रखने का विकल्प चुना। मध्यावधि चुनावों में प्रशासन को मिली बड़ी हार और हाल ही में क्षेत्र में अमेरिकी सेना की कार्रवाइयों के बाद, ट्रम्प ने संकेत दिया कि ईरान पर और हमले होने की संभावना कम है। सोमवार को व्हाइट हाउस में एक ब्रीफिंग के दौरान ट्रम्प ने पत्रकारों से कहा कि सैन्य रूप से ईरान का खेल लगभग खत्म हो चुका है। हम बस यथास्थिति बनाए रख रहे हैं। यह टिप्पणी अमेरिकी राष्ट्रपति और कतरी प्रधानमंत्री शेख मोहम्मद के बीच हुई एक बंद कमरे की बैठक के बाद आई है, जिसमें उन्होंने इस विवाद को सुलझाने के लिए तैयार किए गए मौजूदा मसौदे पर चर्चा की। समझौते के ढांचे के तहत, तेहरान ने होर्मुज जलडमरूमध्य से होकर वाणिज्यिक जहाजों की आवाजाही को बिना किसी रुकावट के जारी रखने की गारंटी देने का प्रस्ताव रखा है, बशर्ते वाशिंगटन ईरानी बंदरगाहों पर लगे अपने नौसैनिक प्रतिबंधों को हटा ले।

ताश के पत्तों की तरह ढहा बांध, पाकिस्तान में तबाही का सैलाब

पाकिस्तान से इस वक्त की सबसे बड़ी और सनसनीखेज खबर सामने आ रही है। जिसने पूरे पाकिस्तान प्रशासन और उसकी घटिया चीनी दोस्ती की पोल खोल कर रख दी है। पाकिस्तान के खैबर पख्तूनवा में मौजूद मशहूर तारबेला बांध के पांचवें एक्सटेंशन प्रोजेक्ट में एक बहुत बड़ा और भयानक हादसा हो गया है। निर्मारदी टनल की दीवारें ताश के पत्तों की तरह ढह गई और देखते ही देखते लाखों गैलन पानी सैलाब बनकर प्रोजेक्ट साइट के अंदर घुस गया। वहां मौजूद चीनी इंजीनियर्स और पाकिस्तानी मजदूरों में ऐसी भगदड़ मची जिसको जहां रास्ता मिला वो अपनी जान बचाकर भागने लगा। खबरों के मुताबिक तरबेला बांध का यह टी5 प्रोजेक्ट पाकिस्तान के लिए बहुत अहम माना जा रहा था। लेकिन सोमवार की शाम को खुदाई के दौरान चट्टान खिसक गई और प्रोटेक्शन वॉल पूरी तरह से ढह गई। पानी इतनी रफ्तार से टनल और निर्माणधीन पावर हाउस में घुसा कि पूरे इलाके में तुरंत इमरजेंसी घोषित करनी पड़ी। हालांकि गनीमत यह रही कि मजदूरों को ऐन वक्त पर रेस्क्यू कर बाहर निकाल लिया गया। लेकिन इस हादसे में पाकिस्तान सरकार और उसके पानी और बिजली विकास प्राधिकरण यानी कि बापटा की नींद उठ पड़ी है। अब जरा उस चीनी कंपनी की पोल पट्टी भी जान लीजिए जिसने भरोसे पाकिस्तान अपनी तकदीर बदलने के सपने देख रहा था। इस पूरे मेगा प्रोजेक्ट का ठेका चीनी कंपनी के पास है। यह पहली बार नहीं है जब चीनी कंस्ट्रक्शन का यह हाल हुआ हो। इससे पहले इसी साल जुलाई के महीने में भी इस प्रोजेक्ट का अस्थाई बांध यानी कि कॉफ डैम ढह गया था। उस समय हुई जांच में साफ खुलासा हुआ था कि चीनी



ठेकेदारों ने बिना किसी अनुमति के डिजाइन में गड़बड़ी की थी और ठेके की शर्तों का खुलेआम उल्लंघन किया गया था।

बावजूद इसके पाकिस्तान की लाचार सरकार ने चीनी कंपनियों पर कोई सख्त कारवाई नहीं की और आज नतीजा सबके सामने है। इस हादसे से पाकिस्तान का केवल बदनामी नहीं बल्कि उसकी जेब पर एक बहुत बड़ा डाका भी पड़ा है। आपको जानकर हैरानी होगी कि जिस प्रोजेक्ट की शुरुआती लागत करीब 82 अरब तय की गई थी। अब चीनी कंपनियों की ढिलाई, घटिया काम और बार–बार होने वाले हादसों की वजह से बढ़कर 317 अरब के पार पहुंच चुकी है। सूची जिस देश की आवाम दानेदाने को तरस रही है, कर्ज मांगने के लिए दुनिया भर में कटोरा लेकर घूमना पड़ रहा है। उस देश के 370 अरब रुपए पानी में बह गए हैं।

खैबर पख्तूनख्वा के टैंक में हथियारबंद लोगों ने 3 पोलियो कर्मियों को अगवा किया

उत्तर–पश्चिमी पाकिस्तान में जारी टीकाकरण अभियान के दौरान अज्ञात हथियारबंद लोगों ने पोलियो टीकाकरण से जुड़े तीन कर्मचारियों का अपहरण कर लिया। पुलिस ने मंगलवार को यह जानकारी दी। पुलिस के अनुसार, हथियारबंद लोग इन तीनों कर्मचारियों को खैबर पख्तूनख्वा के टैंक जिले से अगवा करके किसी अज्ञात जगह पर ले गए। अपहृत कर्मचारियों की पहचान मीर जनन, इकराम और खानजाला घ्क्के रूप में हुई है। टैंक जिला प्रशासन ने भी अपहरण की पुष्टि करते हुए बताया कि अज्ञात हथियारबंद लोगों ने सोरघर इलाके से पोलियो टीकाकरण से जुड़े तीन कर्मचारियों को अगवा कर लिया है। खैबर पख्तूनख्वा में पोलियो टीकाकरण दलों को निशाना बनाकर किए जा रहे अपहरण और हमलों की कई घटनाओं के बीच यह वाकया सामने आया है। टैंक जिले के शेख अत्तर इलाके से अज्ञात हथियारबंद लोगों ने दो नवंबर को चार पोलियो कर्मचारियों का अपहरण कर लिया था। वहीं, लोअर साउथ वजीरिस्तान के आजम वारसक से अगवा किए गए दो अन्य टीकाकरण कर्मियों को बाद में मुक्त कर दिया गया। खैबर जिले के जमरूद के चपरी इलाके से चार नवंबर को पोलियो अभियान के पर्यवेक्षक जलील खान का अपहरण कर लिया गया था। एक अन्य घटना में तीन नवंबर को मोहमंद जिले में पोलियो टीकाकरण टीम की सुरक्षा में तैनात दो पुलिसकर्मियों की अज्ञात हमलावरों ने हत्या कर दी जबकि एक अन्य पुलिसकर्मी घायल हो गया।

काम समेटो और तुरंत निकलो...हूतियों ने किसे धमकाया, सऊदी में मची सनसनी!

सऊदी के तमाम इलाकों को खाली करने के लिए हूतियों ने अल्टीमेटम दिया है। मिडिल ईस्ट की जंग अब एक ऐसे खतरनाक मोड़ पर पहुंच चुकी है जहां से वापसी का कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा। यमन की सरजमी से आई सबसे बड़ी खबर ने रियाद से लेकर वाशिंगटन तक के रक्षा मुख्यालयों में सनसनी फैला दी। यमन के अंसरुल्लाह यानी हूती विद्रोहियों ने सऊदी अरब में मौजूद तमाम विदेशी कंपनियों, कर्मचारियों और आम नागरिकों को तुरंत इलाका खाली करने की अंतिम हिदायत दे दी है। यमन की सैन्य कमान ने साफ कर दिया रियाद, जिद्दा और पूर्वी प्रांत के जिन–जिन रक्षा, आर्थिक और औद्योगिक प्रतिष्ठानों पर हमले का टारगेट सेट किया गया है, वहां काम कर रहे लोग अपनी जान बचाने के लिए तुरंत चले जाएं। क्योंकि इस बार हमला ऐसा होगा जिसकी मिसाल इतिहास में नहीं मिलेगी। अब जरा हूतियों के उस आधिकारिक बयान को समझिए जिसने कॉर्पोरेट दुनिया की नींदें उड़ा दी हैं। यमन के रक्षा मंत्रालय से जुड़े सैन्य सूत्रों ने सार्वजनिक एडवाइज़री जारी करते हुए कहा है हम सऊदी अरब के भीतर यमनी सेना द्वारा चिन्हित किए गए परिसरों में मौजूद सभी कर्मचारियों और आम नागरिकों को सावधान करते हैं कि वे तुरंत उन जगहों से निकल जाए ताकि वे हमारे आने वाले बारूदी तूफान का शिकार ना बने।

प्रतापगढ़ ब्यूरो
शरद कुमार श्रीवास्तव
7/31, अचलपुर, प्रतापगढ़

संस्थापक
स्व.कन्हैया लाल
स्व.श्रीमती साधना
सम्पादक
उमेश चंद्र श्रीवास्तव
प्रबन्ध सम्पादक
अरविन्द पाण्डेय
संयुक्त सम्पादक
अनंत श्रीवास्तव
संयुक्त सम्पादक (तकनीकी)
केशव श्रीवास्तव
विधि सलाहकार
कल्पना श्रीवास्तव

शहर समता
स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा कम्पीटेन्ट बिजनेस सर्विसेज, विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए,कर्नलगंज इलाहाबाद से प्रकाशित
सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
मो.नं.9005239332
आर.एन.आई.नं.
यूपीएचआईएन/2004/22466
Email : shaharsamta@gmail.com
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।

